संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

# दैनिक घटती घटना

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050
Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 20,अंक -312 शुक्रवार ,13 सितम्बर 2024 , पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

## संक्षिप्त खबर

### सीपीएम महासचिव सीताराम येचुरी नहीं रहे

**नई दिल्ली, 12 सितम्बर 2024 (ए) ।** मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव सीताराम येचुरी का निधन हो गया है. उन्होंने 72 साल की उम्र में अंतिम सांस ली. सीताराम येचुरी दिल्ली के एम्स के आईसीयू में भर्ती थे. माकपा ने मंगलवार को एक बयान में कहा था कि 72 वर्षीय येचुरी का एम्स के आईसीयू में इलाज किया गया था, वह एक्यूट रेस्पिरेटरी ट्रैक्ट इन्फेक्शन से पीड़ित थे. उन्हें 19 अगस्त को एम्स के आईसीयू में भर्ती कराया गया था.

#### सीताराम येचुरी के निधन पर पीएम मोदी ने जताया शोक

सीताराम येचुरी के निधन से दुखी हूँ। वे वामपंथ के अग्रणी नेता थे और सभी राजनीतिक दलों से जुड़ने की अपनी क्षमता के लिए जाने जाते थे। उन्होंने एक प्रभावी सांसद के रूप में भी अपनी पहचान बनाई। इस दुख की घड़ी में मेरी संवेदनाएँ उनके परिवार और प्रशंसकों के साथ हैं। ओम शांति।

#### सीताराम येचुरी के निधन के निधन पर सीएम साय ने जताया दुःख

सीपीएम के वरिष्ठ नेता सीताराम येचुरी के निधन का समाचार दुःखद है। ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोकाकुल परिजनों, उनके शुभचिंतकों को संबल प्रदान करने की प्रार्थना करता हूं।

# हरियाणा विधानसभा 52 दिन पहले ही भंग

» देश में संवैधानिक संकट का ऐसा पहला मामला

**चंडीगढ़,12 सितम्बर 2024 (ए) ।** हरियाणा विधानसभा भंग कर दी गई है. प्रदेश में नायब सिंह सैनी कैबिनेट की सिफारिश के बाद राज्यपाल ने गुरुवार (12 सितंबर) को विधानसभा भंग किया. कैबिनेट की ओर से भेजी सिफ़ारिश को गवर्नर ने मंजूरी दी. हरियाणा विधानसभा को भंग किए जाने के बाद अब प्रदेश में सैनी की सरकार केयर टेकिंग की तरह काम करेगी. कार्यवाहक मुख्यमंत्री नायब सैनी नीतिगत फैसले नहीं ले सकेंगे. हरियाणा विधानसभा का आखिरी सत्र 13 मार्च को बुलाया गया था. संवैधानिक रूप से 6 महीने में एक बार विधानसभा सत्र बुलाना जरूरी है।

बंडारू दत्तात्रेय से विधानसभा भंग करने की सिफारिश की. नियम के मुताबिक सदन के दो सत्रों के बीच 6 महीने से अधिक का अंतराल नहीं होना चाहिए। हरियाणा में ज्यादातर पार्टियों में टिकट बंटवारे और उम्मीदवारों की अंतिम सूची जारी होते ही गहमागहमी की स्थिति दिखी. कांग्रेस, बीजेपी समेत कई पार्टियों में नाराजगी दिखी. कई नेताओं ने अंतिम वक्त में पाला बदला तो किसी ने निर्दलीय पर्चा दाखिल किया. प्रदेश में विधानसभा चुनाव को लेकर गुरुवार (12 सितंबर) को नामांकन की तारीख के आखिरी दिन पर्चा दाखिल करने कि लिए प्रत्याशियों के बीच होड़ दिखी।

नूंह में उप जिला निर्वाचन अधिकारी अशोक कुमार ने कहा, हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए नामांकन का आज आखिरी दिन था. कुल मिलाकर, नूंह जिले को 40 नामांकन प्राप्त हुए हैं. नूंह निर्वाचन क्षेत्र से 15, फिरोजपुर झिरका से 13, और पुन्हाना से 12 पर्चा दाखिल किए गए. नामांकन प्रक्रिया सुचारू और शांतिपूर्वक संपन्न हुई, किसी भी घटना की सूचना नहीं मिली.%% हरियाणा में विधानसभा चुनाव को लेकर उम्मीदवार 16 सितंबर तक अपना नाम वापस ले सकते हैं. निर्वाचन आयोग के कार्यक्रम के मुताबिक हरियाणा में 5 अक्टूबर को विधासभा चुनाव को लेकर वोट डाले जाएंगे, जबकि 8 अक्टूबर को वोटों की गिनती की जाएगी.

# श्रुति ने एक ही झटके में खोए परिवार के 9 सदस्य

#### अब एकमात्र सहारा 'मंगेतर' की कल हादसे में हुई मौत

**तिरुवनंतपुरम,12 सितम्बर 2024 (ए) ।** केरल के वायनाड जिले में जुलाई के दौरान हुए विनाशकारी भूस्खलन में सैकड़ों लोगों की जान चली गई। कई-कई परिवार उजड़ गए और लैंडस्लाइड के वक्त मातम जैसे हालात थे। इन्हीं लोगों में शामिल हैं, श्रुति (24), जिन्होंने अपने पूरे परिवार को खो दिया और अब मुश्किल दौर से गुजर रही हैं। बुधवार को श्रुपि को एक और बड़ा झटका लगा, जब उनके मंगेतर जेन्सन की कार हादसे के बाद मौत हो गई। डॉ. मूपेन मेडिकल कॉलेज के प्रवक्ता ने पुष्टि की कि हादसे के दौरान लगी कई चोटों की वजह से जेन्सन गंभीर रूप से घायल हो गए थे और रात 8:50 बजे उनकी मौत हो गई। एजेंसी की रिपोर्ट के मुताबिक, डॉक्टरों ने बताया कि उनकी नाक से बहुत खूब बह रहा था,उनके दिमाग अंदरूनी चोट आई थी।

जेन्सन के साथ मंगलवार को उस वक्त हादसा हुआ, जब उनकी कार एक प्राइवेट बस से टकरा गई। कार में मौजूद श्रुति और जेन्सन के परिवार के कई सदस्य घायल हो गए। मेडिकल स्टाफ की कोशिशों के बावजूद, जेन्सन को बचाया नहीं जा सका।

#### ऐसे हुआ हादसा

30 जुलाई को भूस्खलन की वजह से मेप्पाडी पंचायत के चूरलमाला और मुंडक्कई गांवों में श्रुति के परिवार के 9 सदस्यों की मौत हो गई थी, जिनमें उनके माता-पिता (शिवन्ना, सबिता) और उनकी छोटी बहन श्रेया शामिल थीं। इस आपदा ने अचानक उनकी जिंदगी बदल दी. परिवार के कई सदस्यों को खोने के बाद श्रुति की जिंदगी में उनके मंगेतर जेन्सन की सहारा थे। इस कपल ने त्रासदी से कुछ हफ्ते पहले 2 जून को सगाई की थी।

29 अगस्त को श्रुति और जेन्सन पुथुमाला श्मशान घाट गए थे, जहां उनके परिवार के कुछ सदस्यों का अंतिम संस्कार किया गया था। कुछ दिनों बाद, उनकी दुनिया फिर से बिखर गई, जब जेन्सन एक कार दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गए।

#### शादी करने का बनाया था प्लान

श्रुति और जेन्सन ने पहले तो दिसंबर में एक बड़े शादी कार्यकर्म का प्लान बनाया था, लेकिन भूस्खलन के बाद सितंबर में उन्होंने एक कोर्ट में साधारण रूप से रजिस्टर्ड शादी करने का फैसला किया था। दुखद घटनाओं पर संवेदना व्यक्त करते हुए केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने जेन्सन और श्रुति के परिवार के प्रति संवेदना जताते हुए कहा, यह खबर बहुत दुखद है। आपदाओं की वजह से होने वाले नुकसान की भरपाई कोई नहीं कर सकता। अब हम यह आश्वासन दे सकते हैं कि यह राज्य आपके साथ है, श्रुति। चुनौतियों और दर्द से उबरने की ताकत मिले।

### पायलट को पीटकर हवाई पट्टी से हेलीकॉप्टर लूट कर ले गए बदमाश

**मेरठ,12 सितम्बर 2024 (ए) ।** मेरठ में पहली बार हेलीकॉप्टर लूट का सनसनीखेज मामला सामने आया है। 10 मई 2024 को डॉक्टर भीमराव आंबेडकर हवाई पट्टी पर 10-15 बदमाश जबरन घुस आए और हेलीकॉप्टर के पुर्जे खोलकर ट्रक में लादने लगे। पायलट और कर्मचारियों के विरोध करने पर बदमाशों ने उन्हें जमकर पीटा। पायलट को धमकी दी गई कि अगर वह चुप नहीं रहा तो उसकी टांगे काट दी जाएंगी। इसके बाद, बदमाश राजस्थान नंबर के 16-टायर ट्रक पर हेलीकॉप्टर को लादकर फरार हो गए।

### कर्नाटक के मांड्या में शोभायात्रा में हिंसा के बाद तनाव, 46 लोग गिरफ्तार

**मांड्या 12 सितम्बर 2024 (ए) ।** कर्नाटक के मांड्या में भगवान गणेश की मूर्ति की शोभायात्रा के दौरान भड़की हिंसा के बाद पुलिस ने 46 लोगों को गिरफ्तार किया है। इलाके में 14 सितंबर तक चार से अधिक लोगों के एकत्र होने पर रोक लगाने के लिए निषेधाज्ञा लागू कर दी गई है।

# 20 सीट और जीत जाते तो बीजेपी के कई नेता जेल में रहते

» खरगे के बयान पर भाजपा ने किया पलटवार

**अनंतनाग,12 सितम्बर 2024 (ए) ।** जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने एक ऐसा बयान दे दिया, जिस पर विवाद छिड़ गया है. खरगे ने कहा कि लोकसभा चुनाव में हम अगर 20 और सीट जीत जाते तो अब तक बीजेपी के कई नेता जेल में रहते. खरगे के इस बयान पर बीजेपी ने तगड़ा पलटवार किया है. बीजेपी ने कहा कि खरगे का यह बयान कांग्रेस के आपातकाल मानसिकता का स्पष्ट उदाहरण है।

खरगे ने अनंतनाग में एक चुनावी रैली के दौरान बीजेपी वाले 400 पार, 400 पार कहते थे. आपके 400 पार कहां गए? उन्हें केवल 240 सीट मिलीं.

अगर हम 20 और सीट जीतते, तो वे जेल में होते। वे जेल में रहने के लायक हैं. 'अबकी बार 400 पार' लोकसभा चुनाव में बीजेपी का स्लोगन था। बीजेपी को लोकसभा चुनाव में 240 सीट मिली थीं, जबकि कांग्रेस सहित इंडिया अलायंस को 234 सीट मिली थीं।खरगे के बयान पर बीजेपी प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि यह कांग्रेस की आपातकाल वाली मानसिकता का स्पष्ट उदाहरण है। खरगे कहा कि बीजेपी को उसका विरोध करने वाले राजनीतिक दलों और गठबंधनों को तोड़ने का प्रयास बंद कर देना चाहिए, क्योंकि केंद्र में उसकी अल्पमत सरकार है जो अपने अस्तित्व के लिए टीडीपी और जेडीयू पर निर्भर है. कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस मिलकर जम्मू-कश्मीर में मिलकर चुनाव लड़ रहे हैं, जिससे बीजेपी घबरा गई है. अब वे गठबंधन तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं।खरगे ने आगे कहा कि बीजेपी को अब ऐसा करना बंद कर देना चाहिए। उसके पास अब 400 के पार नहीं, 200 से पार सांसद हैं। यह अल्पमत की सरकार है। चंद्रबाबू नायडू कभी भी समर्थन वापस ले सकते हैं. नीतीश कुमार कभी भी गठबंधन से बाहर निकल सकते हैं।

# गुण्डों ने आर्मी अफसरों पर किया हमला

» बंधक बनाकर महिला मित्र से किया दुष्कर्म

**इंदौर,12 सितम्बर 2024 (ए) ।** मध्य प्रदेश के इंदौर जिले शर्मसार कर देने वाली घटना सामने आई है। यहां मऊ-मंडलेश्वर रोड पर भारतीय सेना के दो अफसरों पर हमला किया गया और उनकी एक महिला मित्र के साथ बलात्कार हुआ। यह घटना बुधवार रात लगभग 2 बजे की है, जब सेना के जवान और उनकी दो महिला मित्र पिकनिक के लिए गए थे। पुलिस के अनुसार, 6-7 अज्ञात हमलावर अचानक पहुंचे और अफसरों के साथ मारपीट कर एक महिला मित्र को बंधक बना लिया।

#### हथियार की नोक पर फिरौती की मांग

हमलावरों ने एक अफसर और महिला मित्र को बंदूक की नोक पर बंधक बना लिया और दूसरे अफसर से 10 लाख रुपये की फिरौती की मांग की। हालांकि, अफसर अपने सीनियर अधिकारियों को सूचित करने में सफल रहा, जिन्होंने तुरंत पुलिस को अलर्ट किया। पुलिस टीम मौके पर पहुंची, लेकिन तब तक हमलावर भाग चुके थे।

#### मेडिकल जांच में बलात्कार की पुष्टि

घटना के बाद, दोनों अफसरों और उनकी महिला मित्रों को मऊ के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया। मेडिकल जांच के बाद यह पुष्टि हुई कि एक महिला के साथ बलात्कार हुआ है। इस घटना ने पूरे इलाके में तनाव और आक्रोश पैदा कर दिया है, और पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है।

# किले की दीवार गिरने से 9 लोग मलबे में दबे

» 2 के शव निकाले,

» मौके पर पहुंची एसडीईआरएफ टीम

**भोपाल/दतिया,12 सितम्बर 2024 (ए) ।** मध्य प्रदेश के दतिया जिले में गुरुवार तड़के किले की दीवार ढहने से 9 लोग मलबे में दब गए। पड़ोसियों ने 2 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया है। जबकि, अन्य लोगों के बचाव के लिए रेस्क्यू ऑपरेशन चल रहा है। खबर लिखे जाने तक 2 लोगों के शव बरामद हो चुके हैं। मलबे में तीन बच्चे भी दबे हुए हैं।राजगढ़ किले हादसे के बाद लोग घबराए हुए हैं। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि सुबह साढ़े 3 बजे हम लोग सो रहे थे, तभी अचानक बहुत तेज आवाज आई। बाहर निकले तो देखा तो दीवार गिरी हुई थी। मलबे में दबे दो लोगों को तुरंत बाहर निकला और अस्पताल पहुंचाया। डॉयल 100 पर कॉल कर पुलिस को सूचना दी, जिसके पुलिसकर्मी भी पहुंच गए और लोगों को निकालने में मदद करने लगे।

#### स्थानीय लोगों ने किया हंगामा

हादसे के बाद स्थानीय लोगों ने सुबह 8 बजे हंगामा कर दिया। वह मलबा हटाने में लापरवाही का आरोप लगा रहे थे। कहा, सुबह 4 बजे से मलबा हटाया जा रहा है, लेकिन रेस्क्यू टीम किसी को बाहर नहीं निकाल पा रहे। कलेक्टर संदीप मकीन, एसपी वीरेंद्र मिश्रा, टीआई धीरेंद्र मिश्रा मौके पर पहुंचे और लोगों को समझाइश देकर शांत कराया। एसडीईआरएफ की टीम बचाव कार्य में जुटी है।

### अमेरिका से पचिया ने दिया घटना को अंजाम

**चंडीगढ़,12 सितम्बर 2024 (ए) ।** चंडीगढ़ के सेक्टर स्थित एक कोठी पर ग्रेनेड हमले से जुड़े मामले में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। शक की सुई हरविंदर सिंह रिंदा और हरप्रीत सिंह उर्फ हैप्पी पचिया की तरफ है। पचिया के बारे में जांच एजेंसियां दावा कर रही हैं कि वह अमेरिका से बैठकर पंजाब को दहलाने की साजिश रच रहा है। उसके पीछे पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई का दिमाग होने की बात भी कही जा रही है।

# घूमने निकले चार दोस्तों की हुई दर्दनाक मौत

**मुजफ्फरनगर,12 सितम्बर 2024 (ए) ।** मुजफ्फरनगर जनपद के नई मंडी कोतवाली क्षेत्र में दिल्ली-देहरादून हाईवे पर पचैंडा बाईपास के निकट हुए दर्दनाक हादसे में चार दोस्तों की मौत हो गई। यहां अर्टिगा गाड़ी आगे चल रहे ट्रक में जा घुसी।

हादसे में अर्टिगा सवार अलीगढ़ के थाना गोंडा के गांव गौणअडा निवासी जुगल पुत्र ललित कुमार, भोला पुत्र महेंद्र पाल, गिरिन पुत्र शिवचरण और राहुल पुत्र बृजवीर की मौत हो गई। तीन युवक घायल हो गए। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

# मैं इस्तीफा देने को तैयार हूं...ममता बनर्जी ने दिया बड़ा बयान

**नई दिल्ली,12 सितम्बर 2024 (ए) ।** कोलकाता में एक रेप केस को लेकर हड़ताल कर रहे डॉक्टरों ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के साथ बैठक करने से इनकार कर दिया है। पश्चिम बंगाल सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद डॉक्टरों को बातचीत के लिए बुलाया था, लेकिन डॉक्टरों ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी डॉक्टरों से बातचीत के लिए खुद पहुंची थीं और दो घंटे से अधिक समय तक इंतजार करती रहीं, परंतु डॉक्टर बातचीत के लिए नहीं आए। ममता बनर्जी ने इसके बाद राज्य की जनता से माफी मांगते हुए कहा, मैं बंगाल की

जनता से हाथ जोड़कर माफी मांगती हूं कि हम डॉक्टरों को काम पर वापस नहीं ला सके। मुख्यमंत्री ने जानकारी दी कि राज्य में इलाज न मिलने के कारण अब तक 27 लोगों की मौत हो चुकी है। उन्होंने कहा, मैंने तीन बार डॉक्टरों से बातचीत की कोशिश की, लेकिन कोई बैठक नहीं हो सकी। अब अगर कोई बातचीत होगी तो मुख्य सचिव और अन्य अधिकारियों के साथ होगी। ममता बनर्जी ने आगे कहा कि कुछ लोग उनकी कुर्सी छीनना चाहते हैं, लेकिन उन्हें सत्ता की भूख नहीं है। उन्होंने कहा, मैं इस्तीफा देने के लिए तैयार हूं। मुझे सत्ता का लालच नहीं है। ममता बनर्जी ने यह भी आरोप लगाया कि कुछ लोगों को बाहर से निर्देश मिल रहे हैं कि वे बातचीत न करें।

### एलओसी के पास से हथियारों का बड़ा जखीरा बरामद

**कुपवाड़ा,12 सितम्बर 2024 (ए) ।** सुरक्षाबलों ने जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा के पास कुपवाड़ा के केरन सेक्टर के एक जंगल से हथियारों का जखीरा जब्त किया है। सुरक्षा बलों ने एक आतंकवादी ठिकाने का भी भंडाफोड़ किया है और हथियारों और गोला-बारूद का बरामद किए हैं। इसमें एके-47 राउंड, हैंड ग्रेनेड, आरपीजी राउंड, इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) के लिए सामग्री और इस तरह की दूसरी चीजें शामिल हैं।

## संपादकीय

### भारत पिछड़ा मौका हाथ से गया

**चीन** ने जो जगह खाली की,उसे बांग्लादेश और वियतनाम जैसे देश भरने में कैसे कामयाब हुए और क्यों भारत पिछड़ गया? चुनौती यह सोचने की भी है कि चूंकि वो मौका हाथ से चला गया है, तो अब आगे क्या विकल्प है?श्रम केंद्रित मैनुफैक्चरिंग सेक्टर्स से चीन के हटने से भारत के सामने बड़ा निर्यातक देश बनने का जो अवसर आया था,वह हाथ से निकल गया है। यह बात विश्व बैंक ने कही है। बैंक ने अपने इंडिया डेवलपमेंट अपडेट में जिक्र किया है कि भारत में अंतरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित प्रत्यक्ष या परोक्ष रोजगार पिछले एक दशक के दौरान घटा है। बताया गया है कि वस्त्र, चमड़ा,कपड़ा,रत्न एवं जेवरात आदि जैसे श्रम केंद्रित सेक्टर्स में विश्व व्यापार में भारत का हिस्सा गिरता चला गया है। जबकि बांग्लादेश, वियतनाम और पोलैंड जैसे देशों ने अपना हिस्सा बढ़ा लिया है। इसके पहले मीडिया रिपोर्टों में बताया गया था कि 2017-18 के बाद से उपरोक्त वस्तुओं के भारतीय निर्यात में 12 फीसदी की गिरावट आई है। नतीजतन,इन क्षेत्रों से जुड़े कारखाने या तो बंद हुए हैं या उन्होंने अपना उत्पादन घटाया है। स्वाभाविक है कि इन क्षेत्रों में बड़ी संख्या नौकरियां गई हैं। विश्व बैंक ने इस अंतर्विरोध का उल्लेख किया है कि एक तरफ भारत आज दुनिया में सबसे तेज गति से बढ़ रही अर्थव्यवस्था है, वहीं देश में शहरी युवा बेरोजगारी की दर 17 प्रतिशत के ऊंचे स्तर पर है। बैंक की राय है कि जब तक भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार से संबंधित क्षेत्रों के वैल्यू चेन (मूल्य शृंखला) में आगे नहीं बढ़ता है, उसके लिए बेरोजगारी की समस्या का हल ढूंढना मुश्किल बना रहेगा। गौरतलब है कि बैंक ने जिस अवधि का विस्तार से जिक्र किया है, वो मेक इन इंडिया और आत्म-निर्भर भारत जैसे नारों के शोर से भरी रही है। लेकिन अब उन नारों की हकीकत देश के सामने है। विचारणीय है कि चीन ने जो जगह खाली की, उसे बांग्लादेश और वियतनाम जैसे देश भरने में कैसे कामयाब हुए और क्यों भारत इसमें पिछड़ गया? चुनौती यह सोचने की भी है कि चूंकि वो मौका हाथ से चला गया है, तो अब देश के सामने क्या विकल्प है? वर्तमान केंद्र सरकार ऐसे गंभीर मसलों पर किसी राष्ट्रीय बहस की शुरुआत करेगी, इसकी उम्मीद तो नहीं है; लेकिन विपक्ष के पास भी क्या इसकी इच्छाशक्ति एवं बौद्धिक साहस है?

# भारत का पहला सबसे बड़ा बहुराष्ट्रीय वायु अभ्यास है 'तरंग शक्ति'

**योगेश कुमार गोयल**
नजफगढ़, नई दिल्ली

### » 'तरंग शक्ति': गरज रहा भारत का आसमान

भारत की निरंतर बढ़ती रक्षा क्षमताओं को वैश्विक स्तर पर उजागर करने तथा विविध भागीदारी अंतर्राष्ट्रीय रक्षा संबंधों को मजबूत करने में अभ्यास के महत्व को रेखांकित करने के लिए इन दिनों जोधपुर में बहुराष्ट्रीय हवाई अभ्यास 'तरंग शक्ति' का आयोजन चल रहा है, जो भारत की रक्षा कूटनीति और सैन्य सहयोग में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। भारतीय वायुसेना की मेजबानी में जोधपुर में शुरू हुए सबसे बड़े बहुपक्षीय वायु अभ्यास 'तरंग शक्ति' का दूसरा चरण 14 सितंबर तक आयोजित किया जा रहा है, जिसमें भारत के अलावा सात देशों के विमान एक साथ युद्धाभ्यास में हिस्सा ले रहे हैं, जिनमें अमेरिका, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया, जापान, सिंगापुर, ग्रीस और यूएई की वायुसेना टीम शामिल हैं। 'तरंग शक्ति' वायु अभ्सास का उद्देश्य विभिन्न देशों की वायु सेनाओं के बीच अंतर-संचालन क्षमता में सुधार करना, आधुनिक युद्ध में सामूहिक सुरक्षा और परिचालन प्रभावशीलता को बढ़ाना है। इस 'वॉर एक्सरसाइज' में भारतीय वायुसेना और विदेशी विमान आसमान में अपना कौशल दिखाकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर रहे हैं। जोधपुर के आसमान में जब भारत की 'सूर्य किरण टीम' ने 9 हॉक्स विमानों के जरिये जोधपुर के आसमान में 'तिरंगा' बनाते हुए विलक्षण करतब दिखाए तो हर कोई दांतों तले उंगली दबाये उसे निहारता ही रह गया।

'तरंग शक्ति' के दौरान 9 सितंबर को तो जोधपुर में भारत की तीनों सेनाओं ने उस समय इतिहास रच दिया, जब पहली बार जल, थल और वायु सेना के उप-प्रमुखों ने स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस में उड़ान भरी। यह पहला अवसर था, जब आर्मी के वाइस चीफ लेफ्टिनेंट जनरल एनएस राजा सुब्रमणि, एयरफोर्स के वाइस चीफ एयर मार्शल एपी सिंह और नौसेना के वाइस चीफ कृष्णा स्वामीनाथन ने 'तेजस' में उड़ान भरी और भारत के तीनों वाइस चीफ की ये उड़ान भारत के लिए रणनीतिक तौर पर अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जा रही है। तरंग शक्ति में भारतीय वायुसेना के राफेल, सुखोई, मिराज, जगुआर और तेजस विमान पूरी दुनिया को अपना जलवा दिखा रहे हैं,वहीं अमेरिका के ए-10 थंडरबोल्ट, ग्रीक के एफ-16 फाइटिंग फाल्कन, ऑस्ट्रेलिया के एफ ए-18 हॉरनेट, जापान के मित्सुबिशी एफ-2 सहित अन्य देशों की एफ-16 विमान के साथ आई टीमें साथ मिलकर एयर-टू-एयर तथा एयर-टू-ग्राउंड ऑपरेशन में अपनी-अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन कर रहे हैं। 'तरंग शक्ति' के पहले और दूसरे चरण में कुल 800 सैनिक शामिल हो रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया की रायल ऑस्ट्रेलियन एयरफोर्स ने भारतीय वायुसेना के 'तरंग शक्ति' अभ्यास के दूसरे चरण में हिस्सा के लेने के लिए पहली बार अपने लड़ाकू विमानों को भारत भेजा है। 12 सितंबर से तरंग शक्ति में 'डिफेंस एक्सपो' शुरू होगा. जिसमें स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस, लड़ाकू हेलीकॉप्टर प्रचंड और लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर ध्रुव शामिल है, साथ ही अन्य हथियारों का भी प्रदर्शन किया जाएगा।

'तरंग शक्ति' का आयोजन पहले 2023 के अंत में करने की योजना थी लेकिन कुछ कारणों से उसे उस समय टाल दिया गया था और अब आयोजित किए जा रहे इस बहुराष्ट्रीय हवाई अभ्यास में स्वदेशी वायु रक्षा क्षमताओं का प्रदर्शन किया जा रहा है, जिसमें विशेष रूप से भारत की रक्षा उत्पादन क्षमताओं को दर्शाया जा रहा है। इस वायु अभ्यास में भारतीय वायुसेना अपने हल्के लड़ाकू विमान, उन्नत हल्के हेलीकॉप्टर तथा हल्के लड़ाकू हेलीकॉप्टर जैसे स्वदेशी प्लेटफार्मों का प्रदर्शन कर रही है। इस बहुराष्ट्रीय हवाई अभ्यास का उद्देश्य इसमें हिस्सा लेने वाले सभी देशों की वायु सेनाओं के बीच अंतर-संचालनीयता को बढ़ावा देना, उन्हें सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने और परिचालन समन्वय में सुधार करने में सक्षम बनाना है। 'तरंग शक्ति' में उड़ान और जमीनी प्रशिक्षण के अलावा रक्षा प्रदर्शनियां तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं और वायु अभ्यास में हिस्सा ले रहे देशों के रक्षाकर्मी भारतीय प्रौद्योगिकी कंपनियों का दौरा भी करेंगे।

'तरंग शक्ति' भारत में आयोजित हो रहा अभी तक का सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय वायु अभ्यास है, जो अपने यथार्थवादी युद्ध परिदृश्यों और व्यापक अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी के लिए जाने जाते रहे अमेरिका के नेतृत्व वाले 'रेड फ्लैग' अभ्यास से प्रेरित बताया जाता है। करीब तीन महीने पहले 4 से 14 जून 2024 तक अलास्का में अयोजित हवाई अभ्यास 'रेड फ्लैग 2024' के दूसरे संस्करण में भारतीय वायुसेना ने भी हिस्सा लिया था। सिंगापुर तथा अमेरिकी विमानों के साथ भारतीय राफेल भी उस संयुक्त अभ्यास में शामिल हुआ था। इन आयोजित मिशनों में आक्रामक काउंटर एयर और एयर डिफेंस भूमिकाओं में लार्ज फोर्स एंगेजमेंट के एक भाग के रूप में बियॉन्ड विजुअल रेंज युद्ध अभ्यास शामिल थे। अमेरिका द्वारा 'रेड फ्लैग' अभ्यास वर्ष में चार बार आयोजित किया जाता है और इसके दूसरे संस्करण में भारतीय वायुसेना के अलावा सिंगापुर वायुसेना, ब्रिटेन की रॉयल एयरफोर्स,रॉयल नीदरलैंड्स वायुसेना और जर्मन लूफ्टवाफे ने भी हिस्सा लिया था। भारतीय वायुसेना ने रेड फ्लैग में पहली बार 8 राफेल लड़ाकू विमान तैनात किए थे, जिन्हें ट्रान्साटलांटिक यात्रा के लिए आईएल-78 मध्य-हवा में ईंधन भरने वाले विमानों के साथ-साथ सी-17 ग्लोबमास्टर विमान की भी सहायता मिली थी।

भारतीय वायुसेना द्वारा इससे पहले 1 से 10 अप्रैल 2024 तक अपनी ताकत का प्रदर्शन करने के लिए 10 दिवसीय हवाई सैन्य अभ्यास 'गगन शक्ति-2024' भी आयोजित किया जा चुका है, जिसमें देश के सभी वायुसेना स्टेशन बारी-बारी से शामिल हुए थे। उस युद्धाभ्यास में करीब 11 हजार वायु सैनिकों ने हिस्सा लिया था। 'गगन शक्ति-2024' में चीन और पाकिस्तान के साथ दो मोर्चों पर युद्ध के लिए तैयारी का परीक्षण भी किया गया था। उस हवाई सैन्य अभ्यास में तेजस, राफेल, सुखोई-30, जगुआर, मिराज 2000, चिनूक, अपाचे, प्रचंड, ट्रांसपोर्ट विमान ग्लोबमास्टर, सी-130 जे सुपर हरक्यूलस, सी-295 ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया था। उस दस दिवसीय हवाई सैन्य अभ्यास में केवल भारतीय वायुसेना के ही सभी वायुसेना स्टेशन शामिल हुए थे जबकि 'तरंग शक्ति' में दुनिया के कुछ प्रमुख देश भारतीय वायुसेना के साथ हिस्सा ले रहे हैं।

बहरहाल, 'तरंग शक्ति' वायु अभ्यास की मेजबानी करके भारत का लक्ष्य रक्षा क्षमताओं में आत्मनिर्भरता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाना और अंतर्राष्ट्रीय रक्षा में अपनी स्थिति को मजबूत करना है। रक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि तरंग शक्ति वायु अभ्यास के साथ भारत की रक्षा कूटनीति में उल्लेखनीय प्रगति होगी। 'तरंग शक्ति' वायु अभ्यास के आयोजन का सबसे बड़ा लाभ यही है कि यह अभ्यास इसमें शामिल रहे देशों की वायु सेनाओं के बीच न केवल व्यावसायिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देगा बल्कि आधुनिक हवाई युद्ध तकनीकों में सीखने और सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण मंच भी प्रदान करेगा। 'तरंग शक्ति' के आयोजन से भाग लेने वाले देशों के बीच लाभकारी संपर्क और सहयोग को बढ़ावा मिलने से भविष्य के रक्षा गठबंधनों का भी निर्माण होगा। 'तरंग शक्ति' अभ्यास के आयोजन का उद्देश्य उन मित्र देशों को एक साथ लाना है, जिनके साथ भारतीय वायुसेना नियमित रूप से बातचीत करती है और जिनके बीच एक निश्चित सीमा तक अंतर-संचालन क्षमता है।

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

# इंडिया गठबंधन के हर दल को ध्यान रखना होगा

समाजवादी पार्टी और कांग्रेस गठबंधन के पिछले कुछ अनुभव अच्छे नहीं रहे। इसलिए और भी सावधानी बरतनी होगी। क्योंकि अखिलेश यादव में इतना बड़प्पन है कि वे अपनी कटु आलोचक बुआजी बहन मायावती से भी संबंध सुधारने में सद्भावना से पहल कर रहे हैं। यही नीति ममता बनर्जी, उद्धव ठाकरे, शरद पवार व लालू यादव आदि को भी अपनानी होगी। तभी ये सब दल भारतीय लोकतंत्र को मज़बूत बना पायेंगे।जून 2024 के चुनाव परिणामों के बाद राहुल गांधी का ग्राफ काफ़ी बढ़ गया है। बेशक इसके लिए उन्होंने लम्बा संघर्ष किया और भारत के आधुनिक इतिहास में शायद सबसे लम्बी पदयात्रा की। जिसके दौरान उन्हें देशवासियों का हाल जानने और उन्हें समझने का अच्छा मौक़ा मिला। इस सबका परिणाम यह है कि वे संसद में आक्रामक तेवर अपनाए हुए हैं और तथ्यों के साथ सरकार को घेरते रहते हैं। किसी भी लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए पक्ष और विपक्ष दोनों का मज़बूत होना ज़रूरी होता है। इसी से सत्ता का संतुलन बना रहता है और सत्ताधीशों की जनता के प्रति जवाबदेही संभव होती है। अन्यथा किसी भी लोकतंत्र को अधिनायकवाद में बदलने में देर नहीं लगती।आज राहुल गांधी विपक्ष के नेता भी हैं। जो कि भारतीय संवैधानिक व्यवस्था के अन्तर्गत एक अत्यंत महत्वपूर्ण पद है। जिसकी बात को सरकार हल्के में नहीं ले सकती। इंग्लैंड, जहां से हमने अपने मौजूदा लोकतंत्र का काफ़ी हिस्सा अपनाया है, वहाँ तो विपक्ष के नेता को शैडो प्राइम मिनिस्टर' के रूप में देखा जाता है। उसकी अपनी समानांतर कैबिनेट भी होती है, जो सरकार की नीतियों पर कड़ी नजर रखती है। ये एक अच्छा मॉडल है जिसे अपने सहयोगी दलों के योग्य नेताओं को साथ लेकर राहुल गांधी को भी अपनाना चाहिए। आपसी सहयोग और समझदारी बढ़ाने के लिए, ये एक अच्छी पहल हो सकती है।राहुल गांधी को विपक्ष का नेता बनाने में इंडिया गठबंधन' के सभी सहयोगी दलों, विशेषकर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की बहुत बड़ी भूमिका रही है। उत्तर प्रदेश से 37 लोक सभा सीट जीत कर अखिलेश यादव ने राहुल गांधी को विपक्ष का नेता बनने का आधार प्रदान किया। आज समाजवादी पार्टी भारत की तीसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई है। ऐसे में अब राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी का ये नैतिक दायित्व है कि वे भी अखिलेश यादव जैसी उदारता दिखाएं जिसके कारण कांग्रेस को रायबरेली और अमेठी जैसी प्रतिष्ठा की सीटें जीतने का मौक़ा मिला। वरना उत्तर प्रदेश में कांग्रेस संगठन और जनाधार के मामले में बहुत पीछे जा चुकी थी। अब महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनाव हैं, जहां कांग्रेस सबसे बड़े दल की भूमिका में हैं। वहाँ उसे समाजवादी पार्टी को साथ लेकर चलना चाहिए और दोनों राज्यों के चुनावों में समाजवादी पार्टी को भी कुछ सीटों पर चुनाव लड़वाना चाहिए। महाराष्ट्र में तो समाजवादी पार्टी के दो विधायक अभी भी थे। हरियाणा में भी अगर कांग्रेस के सहयोग से उसके दो-तीन विधायक बन जाते हैं तो अखिलेश यादव को अपने दल को राष्ट्रीय दल बनाने का आधार मिलेगा। इससे दोनों के रिश्ते प्रगाढ़ होंगे और इंडिया गठबंधन' भी मज़बूत होंगे।स्वाभाविक सी बात है कि कांग्रेस के कुछ बड़े नेताओं को इस रिश्ते से तक़लीफ़ होगी। क्योंकि कांग्रेस और समाजवादी पार्टी का उत्तर प्रदेश में वोट बैंक एक सा है। ये नेता पुराने ढर्रे पर चलकर समाजवादी पार्टी के जनाधार पर निगाह गढ़ाएँगे। पर ऐसी हरकत से दोनों दलों के आपसी संबंध बिगड़ेंगे और बहुत दूर तक साथ चलना मुश्किल होगा। इसलिए इंडिया गठबंधन' के हर दल को ये ध्यान रखना होगा कि जिस राज्य में जिस दल का वर्चस्व है वो वहाँ नेतृत्व संभले पर, साथ ही अपने सहयोगी दलों को भी साथ खड़ा रखे।विशेषकर उन दलों को जिनका उन राज्यों में कुछ जनाधार है। इससे गठबंधन के हर सदस्य दल को लाभ होगा। राहुल गांधी को ये सुनिश्चित करना होगा कि उनके सहयोगी दल इंडिया गठबंधन' में अपने को उपेक्षित महसूस न करें। इंडिया गठबंधन में राहुल गांधी के बाद सबसे बड़ा क़द अखिलेश यादव का है। अखिलेश की शालीनता और उदारता का उनके विरोधी दलों के नेता भी सम्मान करते हैं। ऐसे में अखिलेश यादव को पूरा महत्व देकर राहुल गांधी अपनी ही नींव मज़बूत करेंगे।हालाँकि समाजवादी पार्टी और कांग्रेस गठबंधन के पिछले कुछ अनुभव अच्छे नहीं रहे। इसलिए और भी सावधानी बरतनी होगी। क्योंकि अखिलेश यादव में इतना बड़प्पन है कि वे अपनी कटु आलोचक बुआजी बहन मायावती से भी संबंध सुधारने में सद्भावना से पहल कर रहे हैं। यही नीति ममता बनर्जी, उद्धव ठाकरे, शरद पवार व लालू यादव आदि को भी अपनानी होगी। तभी ये सब दल भारतीय लोकतंत्र को मज़बूत बना पायेंगे।यही बात भाजपा पर भी लागू होती है। सबका साथ-सबका विकास' का नारा देकर भाजपा क्षेत्रीय दलों के साथ एनडीए गठबंधन चला रही है। पर भाजपा का पिछले दस वर्षों का ये इतिहास रहा है कि उसने प्रांतों की सरकार बनाने में जिन छोटे दलों का सहयोग लिया, कुछ समय बाद उन्हीं दलों को तोडऩे का काम भी किया। इससे उसकी नीयत पर इन दलों को संदेह बना रहता है। पिछले दो लोक सभा चुनावों में भाजपा अपने बूते पर केंद्र में सरकार बना पाई। पर 2024 के चुनाव परिणामों ने उसे मिलीजुली सरकार बनाने पर मजबूर कर दिया।पर अब फिर वही संकेत मिल रहे हैं कि भाजपा का नेतृत्व, तेलगुदेशम,जदयू व चिराग़ पासवान के दलों में सेंध लगाने की जुगत में हैं। अगर इस खबर में दम है तो ये भाजपा के हित में नहीं होगा। जिस तरह सर्वोच्च न्यायालय ने जाँच एजेंसियों के तौर-तरीक़ों पर लगाम कसनी शुरू की है, उससे तो यही लगता है कि डरा-धमका कर सहयोग लेने के दिन लद गए। भाजपा को अगर केंद्र में सरकार चलानी है या आगामी चुनावों में भी वो राज्यों की सरकारें बनाना चाहती है तो उसे ईमानदारी से सबका साथ-सबका विकास की नीति पर चलना होगा।

हमारे लोकतंत्र का ये दुर्भाग्य है कि जीते हुए सांसद और विधायकों की प्राय- बोली लगाकर उन्हें ख़रीद लिया जाता है। इससे मतदाता ठगा हुआ महसूस करता है और लोकतंत्र की जड़ें भी कमज़ोर होती हैं।

**-विनीत नारायण-**

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

# जम्मू-कश्मीर पर रक्षामंत्री का दूरगामी सन्देश

**विधानसभा चुनाव की सरगर्मियों के बीच राजनाथ सिंह ने कहा कि हम गुलाम कश्मीर पर अपना दावा कभी नही छोंगे। वैसे भी गुलाम कश्मीर के लोग हमारे ही लोग है, उन्हें पाकिस्तान ने कभी अपना माना ही नहीं है। राजनाथ सिंह का गुलाम कश्मीर के लोगों को संदेश पाकिस्तान के ताबूत में आखिरी कील की तरह है...**

जम्मू-कश्मीर में चुनाव प्रचार को एक नई करवट देते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ऐसी बातें कहीं है जो घाटी के लोगों के दिलों को छूने वाली होने के साथ प्रांत में नई उम्मीदों के नये दौर का आगाज है एवं गुलाम कश्मीर के लोगों के प्रति सहानुभूति एवं आत्मीयता दर्शाने वाली है। एक दिन पहले करगिल युद्ध को लेकर पाकिस्तान के आर्मी चीफ जनरल आसिम मुनीर ने वो बात कुबूल कर ली, जो अब तक सारे पाकिस्तानी जनरल पूरी दुनिया से छिपाते रहे। आसिम मुनीर ने साफ-साफ कहा कि कारगिल जंग में पाकिस्तानी सेना का हाथ था। उनके सैनिकों ने शहादत दी है। इसके अगले ही दिन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का जम्मू-कश्मीर की धरती से ये ऐलान कि अगर पाकिस्तान आतंक छोड़ दे तो उसके साथ बातचीत हो सकती है। यह बयान बहुत कुछ कहता है एवं इसके कई दूरगामी राजनीतिक दृष्टिकोण है। पाकिस्तान समझ चुका है कि कश्मीर में अब उसका कुछ नहीं बचा। रही सही कसर, जम्मू-कश्मीर में हो रहे चुनावों में लोगों की जोरदार भागीदारी ने पूरी कर दी। उसकी सारी उम्मीदों पर पानी फिरता दिख रहा है, ऐसे में वह हकीकत स्वीकार करता नजर आ रहा है। रक्षामंत्री की कही बातों में पाकिस्तान सरकार को सीधा सन्देश दिया गया है। निश्चित ही राजनाथ सिंह के बयान एक अनुभवी एवं कद्दावर नेता के रणनीतिक एवं दूरगामी सोच से जुड़े बयान है, जिनकी प्रतिक्रिया दोनों ही देशों में होने के साथ ही चुनाव में हिस्सेदारी कर रहे राजनीतिक दलों में सुगबुगाहट का बड़ा कारण बना है।

कश्मीर में विकास, पर्यटन में भारी वृद्धि, शांति एवं सौहार्द का वातावरण बनना गुलाम कश्मीर के लोगों को प्रेरित कर रही हैं कि उन्हें भी इस ओर आजाद फिजा में सांस लेने का मौका मिले। ऐसे में रक्षामंत्री ने उन्हें भारत का हिस्सा बनने का निमंत्रण देकर पड़ोसी देश की दुखती रग को छेड़ दिया है एवं पाकिस्तान की नींद उड़ा दी है, बल्कि गुलाम कश्मीर के लोगों में भी नया विश्वास एवं मनोबल जगा दिया है। रक्षामंत्री का यह निमंत्रण बहुत मायने रखता है, इससे पहले गृहमंत्री अमित शाह ने भी कहा था कि गुलाम कश्मीर हमारा है एवं हम इसे लेकर रहेंगे। गुलाम कश्मीर के लोग भारत से मिलने के लिये उत्सुक है,आन्दोलनरत है। क्योंकि पाकिस्तानी शासक उन्हें विदेशियों की तरह देखते हैं। यह एक सच्चाई भी है। पाकिस्तान अपने कब्जे वाले कश्मीर के लोगों का जैसा दमन और शोषण कर रहा है, उसके कई प्रमाण सामने आ चुके हैं। इसी दमन और शोषण के चलते जब-तब वहां पाकिस्तान के खिलाफ सड़कों पर उतरकर लोग भारत जाने की अनुमति भी मांगते रहते हैं। गुलाम कश्मीर में आंदोलन का नेतृत्व कर रहे लोगों को मारा जा रहा है। वहां के लोग यह अच्छी तरह देख रहे हैं कि भारतीय भूभाग में किस तरह तेजी से विकास हो रहा है और उन्हें किस तरह पाकिस्तान की ओर से ठगा जाता रहा है। कहना कठिन है कि रक्षा मंत्री के बयान पर पाकिस्तान क्या कहता है, लेकिन इसके आसार कम ही हैं कि वह आतंकवाद को सहयोग-समर्थन देने से बाज आएगा। पाकिस्तान की दमनकारी नीतियों के खिलाफ आंदोलन कर रहे इस चुनाव पर सिर्फ भारतीयों नहीं,पूरी दुनिया की नजर है। विधानसभा चुनाव की सरगर्मियों के बीच राजनाथ सिंह ने कहा कि हम गुलाम कश्मीर पर अपना दावा कभी नही छोड़ेंगे। वैसे भी गुलाम कश्मीर के लोग हमारे ही लोग है, उन्हें पाकिस्तान ने कभी अपना माना ही नहीं है। राजनाथ सिंह का गुलाम कश्मीर के लोगों को संदेश पाकिस्तान के ताबूत में आखिरी कील की तरह है।

रक्षा मंत्री ने अपने वक्तव्य के जरिये चुनाव के परिदृश्यों को एक नया मोड़ दिया है। उन्होंने नेशनल कॉन्फ्रेंस, पीडीपी और कांग्रेस को भी निशाने पर लिया। उनके लिए ऐसा करना इसलिए आवश्यक हो गया था,क्योंकि नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी के नेता पाकिस्तानपरस्ती का परिचय देते हुए उससे बात करने पर जोर दे रहे हैं, लेकिन ऐसा करते हुए वे यह रेखांकित नहीं करते कि वार्ता के लिए उसे आतंकवाद पर लगाम लगानी होगी। नेशनल कॉन्फ्रेंस और पीडीपी कश्मीर के लोगों को अनुच्छेद-370 की वापसी का भी सपना दिखा रहे हैं। यह दिवास्वप्न के अलावा और कुछ नहीं, क्योंकि अब इस विभाजनकारी और अलगाववाद को बढ़ावा देने वाले अनुच्छेद की वापसी संभव नहीं और इसीलिए रामबन में राजनाथ सिंह ने कहा, भाजपा ने डंके की चोट पर अनुच्छेद 370 हटाकर जम्मू-कश्मीर में शांति और समृद्धि का रास्ता बनाया है। किसी माई के लाल में हिम्मत नहीं कि वह इस अनुच्छेद को वापस ला सके। ऐसा कहते हुए उन्होंने कांग्रेस को भी निशाने पर लिया, जो कि नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ मिलकर चुनाव लड़ रही है और अनुच्छेद-370 की वापसी के उसके वादे पर मौन धारण किए हुए है। पाकिस्तान एवं घाटी के विभिन्न राजनीतिक दल बार-बार अनुच्छेद 370 का जिक्र कर दुनिया के सामने यह गीत गाते रहे हैं कि 370 हटने से कश्मीर के लोग नाराज हैं। इस झूठ को खुलासा स्वयं कश्मीर की जनता ने लोकसभा चुनाव में वोटिंग के जरिये किया है। घाटी में चुनाव में हिस्सेदारी कर रहे हैं राजनीतिक दल पाकिस्तानी राग अलापते रहे हैं। उमर अब्दुल्ला इस वक्त अफ़ज़ल को दी गयी फांसी के विवाद में घिर चुके हैं। उन्होंने कह दिया कि अफ़ज़ल को फाँसी देना गलत था। चूँकि अफ़ज़ल संसद पर हमले का ज़िम्मेदार था, उसकी तरफदारी करके नेशनल कान्फ्रेंस स्पष्ट रूप से जता रही है कि वह आतंकवादियों से मिली हुई है या उनकी तरफ़दारी कर रही है और कांग्रेस उसकी साथी है। इन स्थितियों में कांग्रेस को यह स्पष्ट करना चाहिए कि क्या वह नेशनल कॉन्फ्रेंस के घोषणापत्र में किए गए वादों से सहमत है? उसे यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि क्या वह उमर अब्दुल्ला के इस आकलन से सहमत है कि संसद पर हमले की साजिश रचने वाले अफजल गुरु को फांसी की सजा देने से कुछ हासिल नहीं हुआ? यह अलगाववाद और आतंकवाद के दौर की वापसी के समर्थकों की हमदर्दी हासिल करने वाला ही बयान है और इसीलिए राजनाथ सिंह ने उन पर कटाक्ष किया कि अफजल को फांसी न दी जाती तो क्या उसके गले में हार डाले जाते। यह विडंबना ही है कि कांग्रेस उमर अब्दुल्ला के इस बयान पर भी चुप्पी साधे है, जबकि उसे फांसी की सजा मनमोहन सिंह सरकार के समय ही दी गई थी। ऐसे में कश्मीर के लोगों को तय करना होगा कि वे देश प्रेमियों के साथ हैं या देशद्रोहियों के साथ? बहरहाल, धारा 370 हटने के बाद यहाँ पहली बार हुए लोकसभा चुनाव में पचास प्रतिशत से ऊपर मतदान हुआ था जो अच्छा संकेत है। वर्ना इससे पहले तो तीस प्रतिशत मतदान को भी अच्छा समझा जाता रहा।

जम्मू एवं कश्मीर के चुनाव अनेक दृष्टियों से न केवल राजनीतिक दशा-दिशा स्पष्ट करेंगे बल्कि बल्कि राज्य के उद्योग,पर्यटन,रोजगार,व्यापार, रक्षा,शांति आदि नीतियों तथा राज्य की पूरी जीवन शैली व भाईचारे की संस्कृति को प्रभावित करेगा। वैसे तो हर चुनाव में वर्ग, जाति, सम्प्रदाय का आधार रहता है, पर इस बार वर्ग, जाति, धर्म, सम्प्रदाय व क्षेत्रीयता के साथ गुलाम कश्मीर एवं अनुच्छेद 370 के मुद्दे व्यापक रूप से उभर कर सामने आयेंगे। इन चुनावों में मतदाता जहां ज्यादा जागरूक दिखाई दे रहा है, वहीं राजनीतिज्ञ भी ज्यादा समझदार एवं चतुर बने हुए दिख रहे हैं। उन्होंने जिस प्रकार चुनावी शतरंज पर काले-सफेद मोहरें रखे हैं, उससे मतदाता भी उलझा हुआ है। अपने हित की पात्रता नहीं मिल रही है। कौन ले जाएगा राज्य की एक करोड पच्चीस लाख जनता को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में विकास एवं शांति की दिशा में। इन स्थितियों में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कश्मीर की जनता को जागरूक किया है एवं मतदान के प्रति सतर्क होने के साथ अपना मतदान विवेक से करने का वातावरण निर्मित किया है।

**-ललित गर्ग-**

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

# आदिवासियों को थाने में एफआईआर कराने के लिए करना पड़ता है प्रदर्शन : अमरजीत

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

सिमेंट सहित सभी प्रकार के निर्माण सामग्रियों के कीमतों और विद्युत दरों में वृद्धी के साथ ही सरगुजा संभाग में बदतर हो चुकी कानून व्यवस्था को लेकर गुरुवार को जिला कांग्रेस कमेटी सरगुजा ने डाटा सेटर के पास धरना प्रदर्शन किया। प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने सिमेंट कंपनियों के द्वारा परस्पर सहमति से सिमेंट की बोरियों के दाम 50 रुपए बढ़ाये जाने के बाद प्रदेश स्तर पर महंगाई को लेकर जिला मुख्यालयों में यह धरना प्रदर्शन आहूत किया था। इस दौरान आयोजित सभा को संबोधित करते हुए पूर्व केबिनेट मंत्री अमरजीत भगत ने कहा कि सिमेंट कंपनियां छत्तीसगढ़ के संसाधनों को कौडी के मोल खरीद कर उससे सस्ता सीमेंट बनाती हैं और छत्तीसगढ के लोगों को ही महंगा सिमेंट बेच रहीं हैं। सिमेंट कंपनियों का यह मनमाना व्यवहार नहीं चलेगा। उन्हेंने प्रदेश सरकार के आदीवासी नेतृत्व को निशाना बनाते हुए संदीप लकडा हत्याकांड के संदर्भ में कहा कि एक आदिवासी मुख्यमंत्री के रहते हुए आदिवासियों को थाने में एफआईआर कराने के लिये प्रदर्शन करना पडता है, तब एफआईआर होती है। पुलिस की लापरवाही से एक आदीवासी की हत्या कर उसके लाश को दफन कर दिया जाताा है और पुलिस 3 महीने तक सोती रहती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस एकजुटता के साथ इस असफल सरकार को उखाड फेंकेगी।

सभा को संबोधित करते हुए महापौर डॉ. अजय तिर्की ने कहा कि प्रदेश का प्रशासन अकर्मण्य हो चुका है। प्रशासन पूरी तरह से पूजिपतियों के लिये कार्य करते हुए आदिवासियों के जल-जंगल-जमीन को उजाडने में लगा हुआ है। उसे जनकल्याण की कोई चिंता नहीं रही है। निगम सभापति अजय अग्रवाल ने कहा कि जबसे प्रदेश में विष्णुदेव सरकार आयी है, कीमतें दुगनी हो गई हैं। उन्होंने कहा कि डबल इंजन का हवाला देते हुए प्रदेश में भाजपा ने सरकार

बनायी, लेकिन इस देश में जहॉ-जहॉ डबल इंजन की सरकार है वो सबसे बदहाल हाल में हैं। डबल इंजन की सरकारों को जनकल्याण से कोई लेना-देना नहीं है। श्रम कल्याण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष शफी अहमद ने विष्णुदेव सरकार पर आरोप लगाया कि सिमेंट के रेट में वृद्धी करवाकर सरकार कमीशनखोरी कर रही है। उन्होंने कहा कि हाल ही में प्रदेश में बडी संख्या में प्रधानमंत्री आवास की स्वीकृति हुई है। उसके तुरंत बाद सिमेंट कंपनियों ने सिमेंट की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि की है। स्पष्ट है कि सरकार और सिमेंट कंपनियों की भागीदारी से सिमेंट के दामों में वृद्धी हुई है। सभा का संचालन दुर्गेश गुप्ता के द्वारा किया गया, जबकि आभार प्रदर्शन शंकर प्रजापति के द्वारा किया गया। सभा को ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष हेमंत सिन्हा, मो. इस्लाम, नुरुल अमीन सिद्धकी, सत्येन्द्र तिवारी, लालचंद यादव, विकल झा, आतिश शुक्ला, प्रमोद चौधरी, दीपक मिश्रा, रजनीश सिंह,अविनाश कुमार, मिथुन सिंह परवेज आलम गांधी, मिथुन सिंह आदि ने भी संबोधित किया। सभा में अनीमा केरकेट्टा, गीता श्रीवास्तव, सरोज साहू, अनूप मेहता, गुरुप्रीत सिद्धू, नरेन्द्र विश्वकर्मा, फैसल सिद्धकी, अमित सिंह, अभिषेक सिंह, विकास केशरी, केदार यादव, मो काजू खान, मो बाबर, विनोद एक्का, कृष्ण कुमार गुप्ता, संजय सिंह, सुदामा कुर्रे विकास दुबे, पटेल चौधरी, नितेश ताम्रकार, रजनी, कपसा बाई, अंजू सिंह, प्रिति सिंह आदि उपस्थित थे।

## प्रदेश में बढ़ रहा सॉय-सॉय भ्रष्टाचार

सभा को संबोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष जेपी श्रीवास्तव ने कहा कि विष्णुदेव साय के शासनकाल में कीमतों में वृद्धी हो रही है सॉय-सॉय, भ्रष्टाचार भी बढ़ रहा है सॉय सॉय और कानून-व्यवस्था की स्थिति भी खराब हो रही है सॉय-सॉय। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश की नौकरशाही इस अकुशल सरकार पर हावी हो गई, जिससे पूरे प्रदेश का प्रशासनिक तंत्र गढबडा गया है। प्रदेश कांग्रेस महामंत्री द्वितेन्द्र मिश्रा ने कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति खराब है। प्रदेश सरकार की अकर्मण्यता से जनता महंगाई के बोझ तले दब गई है। सरकार अपनी असफलता को छिपाने के लिये धार्मिक भावनाओं को भडका रही है और उसकी आड में छुप रही है। अंत में सभा को संबोधित करते हुए जिला कांग्रेस अध्यक्ष श्री राकेश गुप्ता ने कहा कि अधिकांश सिमेंट कंपनियों में मोदी सरकार की लाडली कंपनी अदानी की 80 प्रतिशत तक भागीदारी है। अदानी को फायदा दिलवाने के लिये सिमेंट की कीमतों में भारी भरकम वृद्धी की छूट प्रदेश सरकार ने दी है।

# प्रदेश के साथ सरगुजा संभाग में भी कानून व्यवस्था हो गई है ठप्प

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

पूरे प्रदेश के साथ सरगुजा संभाग में भी कानून व्यवस्था ठप हो गई है। अपराधियों के हौसले बुलंद हैं। आए दिन हत्या,लूट सहित अन्य घटनाएं हो रही है। उक्त बातें पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने गुरुवार को अपने निवास पर पत्रकारों से चर्चा के दौरान कही। उन्होंने कहा कि मैं इस मत में था कि विष्णुदेव सरकार के 1 वर्ष के कार्यकाल के उपरांत ही उनके कामकाज पर टीका टिप्पणी करुंगा, लेकिन प्रदेश की बिगड़ती कानून व्यवस्था की स्थिति एवं प्रशासन की निष्क्रियता ने समय से पहले बोलने को बाध्य किया है। उन्होंने आरोप लगाया है कि पूरे प्रदेश के साथ- साथ सरगुजा संभाग में भी कानून व्यवस्था ठप हो गई है। अपराधियों के हौसले बुलंद है। रामानुजगंज के बीच बाजार में दिन दहाड़े डकैतों ने हथियार के बल पर ज्वेलरी शॉप में करोड़ों की लूट की घटना को अंजाम देते हैं। उसके बाद बाइक से छत्तीसगढ की सीमा को पार कर झारखंड चले जाते हैं और पुलिस कुछ नहीं कर पाती है। उन्होंने सरगुजा संभाग में घटित अपराधों जिनमें अक्षत हत्याकांड, संदीप लकड़ा हत्याकांड, सिलसिला गांव की औद्योगिक दुर्घटनाओं का हवाला देते हुए कहा कि, छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद कानून व्यवस्था की इतनी बतदतर स्थिति कभी नहीं रही।

## पुलिस-प्रशासन का अपराधियों पर नहीं है नियंत्रण

रायपुर में उद्योगपतियों पर हुई फायरिंग का हवाला देते हुए उन्होंने बताया कि राज्य में अब संगठित अपराध बढ़ता जा रहा है। कानून व्यवस्था की बदतर स्थिति को लेकर लोगों से अपील की है कि लोग अपनी सुरक्षा की व्यवस्था स्वयं करें। राज्य सरकार, पुलिस या प्रशासन का नियंत्रण अपराधियों पर नहीं रह गया है। उन्होंने कहा कि वास्तव में प्रदेश की सरकार या प्रशासन कुछ भी नहीं कर रहा है। यह समझ में नहीं आ रहा है कि प्रदेश की सरकार चल भी रही है या कहीं से चलाया जा रहा है। कोई भी विभाग अपना कार्य नहीं कर रहा है। विभागों में फाईलें मूव नहीं हो रही है। आम जनता असमंजस की स्थिति में है। वास्तव में प्रदेश की जनता सरकार की उदासीनता से हैरान व परेशान है।

# प्रसव के दौरान जच्चा-बच्चा की मौत, परिजन ने लगाया लापरवाही का आरोप

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

प्रसव के दौरान मेडिकल कॉलेज अस्पताल में जच्चा-बच्चा की मौत हो गई। मामले में परिजन ने चिकित्सकों पर लापरवाही का आरोप लगाया है। परिजन का आरोप है कि शंकरगढ़ अस्पताल से रेफर करने पर प्रसव के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल लेकर आए थे। यहां समय पर उपचार न किए जाने से बच्चा व उसकी मां की मौत हो गई।

जानकारी के अनुसार मुनिया तिर्की पति हरिवंश तिर्की (36) ग्राम करासी थाना शंकरगढ़ की रहने वाली थी और गर्भवती थी। परिजन उसे प्रसव कराने के लिए 10 सितंबर को भरतपुर अस्पताल में भर्ती कराया था। लेकिन उसकी स्थिति ठीक न होने के कारण चिकित्सकों ने शंकरगढ़ अस्पताल रेफर कर दिया था। परिजन महिला को लेकर शंकरगढ़ अस्पताल पहुंचे। यहां भी चिकित्सकों ने रेफर कर दिया। परिजन रात करीब 10.30 बजे महिला को लेकर मेडिकल कॉलेज अस्पताल पहुंचे। यहां उसे एमसीएच में भर्ती कराया गया। 11 सितंबर की सुबह चिकित्सकों ने उसका ऑपरेशन प्रसव कराया। इस दौरान महिला ने मृत बच्चे को जन्म दी। प्रसव के बाद महिला की स्थिति काफी बिगड़ गई थी। उसे इलाज के लिए आईसीयु में भर्ती कराया गया था। मृत बच्चे को जन्म होने पर पिता ने उसके शव को लेकर अपने घर अंतिम संस्कार करने चला गया। इधर उसकी पत्नी आईसीयू में भर्ती थी। महिला को देख रेख के लिए अन्य परिजन भी साथ में थे। तभी इलाज के दौरान महिला की मौत गुरुवार की सुबह हो गई। गर्भ में बच्चे की मौत हो जाने व दूसरे दिन मां की भी मौत हो जाने से परिजन सदमे में हैं। परिजन ने चिकित्सकों पर इलाज में लापरवाही का आरोप लगाया है। परिजन का कहना है कि महिला के साथ चिकित्सक व स्टाफ नर्स का व्यवहार ठीक नहीं था। उसके साथ गाली गलौत तक की गई थी। मामले में मेडिकल कॉलेज अस्पताल के एमएस डॉ. आरसी आर्या ने बताया कि अस्पताल पहुंचने से पूर्व ही महिला का गर्भासय फट गया था। इस स्थिति में बच्चे व मां की स्थिति गंभीर हो गई थी। ऑपरेशन कर मृत अवस्था में बच्चे को बाहर निकला गया। वहीं इलाज के दौरान महिला की भी मौत हो गई।

# अदाणी कौशल विकास केंद्र,साल्ही के पांच प्रशिक्षुओं को तेलंगाना की प्रसिद्ध कंपनी में मिला रोजगार

» हैदराबाद के श्नाइडर इलेक्ट्रिक कंपनी में सहायक इलेक्ट्रीशियन के पद में करेंगे नौकरी

- संवाददाता -
उदयपुर,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

अदाणी कौशल विकास केंद्र (एएसडीसी),साल्ही के पांच प्रशिक्षुओं ने अपनी पेशेवर यात्रा की शुरूआत तेलंगाना की एक नामी बहुराष्ट्रीय कंपनी से की है। राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (आरआरवीयूएनएल) द्वारा सरगुजा जिले के उदयपुर ब्लॉक में युवाओं के कौशल विकास के उद्देश्य से चलाए जा रहे कौशल विकास केंद्र में आस पास के गांवों के युवा इलेक्ट्रिशियन कौशल का प्रशिक्षण ले रहे थे। जिनके सफलता पूर्वक सम्पन्न होने पर अब उन्हें फ्रांस की भारत में हैदराबाद स्थित श्नाइडर इलेक्ट्रिक कंपनी में रोजगार मिल गया है। जहां उन्हें प्रतिमाह 16,000 रुपये से भी ज्यादा का शुरुआती वेतन मिलेगा। चयनित उम्मीदवारों में घाटबर्रा गांव के गुलाब कुर्रे, भूपेन्द्र चौधरी, और बालीचरण, तथा साल्ही गांव के देवेश सिंह चंदेल और विवेक ठाकुर ने इस कंपनी में सहायक इलेक्ट्रीशियन के पद पर प्लैस्मेन्ट हासिल किया है।

इन उम्मीदवारों ने अपनी सफलता का श्रेय अदाणी कौशल विकास केंद्र और अपने अपने माता पिता को दिया है। उन्होंने अपनी खुशी का इजहार करते हुए बताया कि,÷अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद हमें कोई भी कौशल का ज्ञान और समझ न होने की वजह से कोई अच्छी नौकरी नहीं मिल पा रही थी। जिससे हम बेरोजगार घूम रहे थे। किन्तु जब हमें अदाणी कौशल विकास केंद्र के विभिन्न पाठ्यक्रमों के बारे में पता लगा तो हमने इलेक्ट्रिशियन के पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। और अब हमारा एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में चयन हो गया है। हम खूब मेहनत और ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करेंगे और अपने करिअर को सफल बनाएंगे।

# डीजे की तीव्र ध्वनि से ब्रेन हेमरेज का शिकार हो गया युवक...रायपुर रेफर

- संवाददाता -
अंबिकापुर, 12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

डीजे की तीव्र ध्वनि से ब्रेन हेमरेज की संभावना बताई जा रही है। संजय जायसवाल (40) बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के सनावल का रहने वाला है। दो दिन पूर्व चक्कर आने व उल्टी की शिकायत पर परिजन उसे इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया। यहां ईएनटी विभाग के चिकित्सक डॉ. शैलेंद्र गुप्ता ने जब उसका सीटी स्कैन कराया और रिपोर्ट देखी तो युवक के सिर के पीछे हिस्से का नस फटने से ब्लड क्लॉटिंग हुई थी। चिकित्सक ने बताया कि सामान्यतः ऐसा हाई ब्लड प्रेशर, एक्सीडेंट व मारपीट की घटना में होता है, जबकि युवक के परिजन द्वारा उसके साथ ऐसी कोई घटना न होने की बात बताई गई।

डॉ. शैलेंद्र गुप्ता ने बताया कि दो माह में मेडिकल कॉलेज अस्पताल में 500 मरीजों का सुनाई देने की क्षमता की जांच की गई, जिसमें 161 मरीजों में सुनाई देने वाली नसों के प्रभावित होने की बात जांच में सामने आई है। वर्तमान में ध्वनि प्रदूषण के कारण बधिरता में 15 प्रतिशत की वृद्धि देखी जा रही है। समान्य तौर पर 70 डेसीबल की तीव्रता की ध्वनि मानव शरीर के लिये उपयुक्त रहती है। 85 डेसीबल की ध्वनि तीव्रता लगातार कान में पडने से सुनने की क्षमता में स्थायी रूप से कमी कर सकती है। सुनने की क्षमता के साथ स्वभाव में चिड़चिड़ापन,उच्च रक्तचाप, हृदय घात, लकवा, अनिद्रा, भूलने की बीमारी व एलजाइमर्स बीमारी होने की संभावना हो सकती है।

## रोकथाम के लिए डॉक्टर ने सौंपा ज्ञापन

राष्ट्रीय बधिरता रोकथाम एवं नियंत्रण कार्यक्रम के जिला नोडल अधिकारी डॉ. शैलेंद्र गुप्ता ने ध्वनि प्रदूषण से होने वाले खतरों से बचाव के लिए कलेक्टर एवं पुलिस को ज्ञापन सौंपा है। उन्होंने जिला प्रशासन से आग्रह किया है कि ध्वनि विस्तारक यंत्र द्वारा उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण से आमजन का स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है।

# पीजी कॉलेज ग्राउंड से बाइक चोरी,जुर्म दर्ज

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

पीजी कॉलेज ग्राउंड से 9 सितंबर की रात को अज्ञात चोरों ने युवक की बाइक पार कर दी। युवक ने मामले की रिपोर्ट गांधीनगर थाना में दर्ज कराई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। जानकारी के अनुसार मंजीत सिंह गोधनपुर का रहने वाला है। वह 9 सितंबर की रात करीब 10 बजे पीजी कॉलेज ग्राउंट टहलने गया था। वह बाइक क्रमांक सीजी 15 ईबी 4764 को मैदान में की खड़ा किया था। आधा घंटा बाद बाइक खड़े किए स्थान पर जाकर देखा तो उसकी बाइक नहीं थी। वह मामले की रिपोर्ट गांधीनगर थाना में दर्ज कराई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

# एसोसिएशन ने की जल्द से जल्द लुटेरों को गिरफ्तार करने की मांग

- संवाददाता -
अंबिकापुर,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

रामानुजगंज निवासी राजेश सोनी के ज्वेलरी दुकान से बुधवार को दिन दहाड़े बदमाशों ने 5 करोड़ रुपए के कीमत के सोने लूटकर फरार हो गए हैं। मामले में सर्राफा एसोसिएशन ने सरगुजा प्रवास पर पहुंचे प्रदेश के उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा से मुलाकात कर कार्रवाई की मांग की है। एसोसिएशन ने गृह मंत्री को अवगत कराया है कि सरगुजा संभाग में पिछले कुछ दिनों के अंदर 5 चोरी, 3 उठाईगिरी सर्राफा दुकानदारों से हुई है। जिसमें एक चोरी व दो उठाईगिरी का प्रकरण पुलिस ने हल कर लिया है। शेष मामले की कार्रवाई अब तक नही हुई है। एसोसिएशन ने गृहमंत्री से मांग की है कि जल्द से जल्द सभी प्रकरणों में आरोपियों गिरफ्तारी कराई जाए। वहीं रामानुजगंज में डकैती के मामले में गृह मंत्री ने आरोपियों की अविलंब गिरफ्तार किए जाने की बात कही है। प्रतिनिधिमंडल में सुरेश सोनी उपाध्यक्ष, रंजीत सोनी सरगुजा जिला प्रभारी, राजू सोनी महामंत्री, कृष्णा सोनी कोषाध्यक्ष, रविंद्र सोनी कोषाध्यक्ष, बलराम सोनी उपाध्यक्ष शामिल रहे।

## एसोसिएशन ने आंदोलन की दी चेतावनी

मामले में स्वर्णकार वेलफेयर एसोसिएशन छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष डीके सोनी द्वारा प्रदेश के उप मुख्यमंत्री व गृहमंत्री विजय शर्मा से मिलकर तत्काल लुटेरों की गिरफ्तारी की मांग की है। डीके सोनी ने गृह मंत्री को अवगत कराया है कि रामानुगंज झारखंड सीमा सीमा से लगे होने के कारण इससे पूर्व भी कई घटनाएं हो चुकी है। इसके बावजूद भी रामानुजगंज पुलिस सुस्त है। मामले को गंभीरता से लेते हुए उप मुख्यमंत्री ने उक्त घटना की जानकारी हेतु पुलिस अधीक्षक को फोन पर जानकारी लिया और मामले में तत्काल कार्रवाई करने हेतु बोला। मामले में अगर जल्द से जल्द आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होती है तो स्वर्णकार व सर्राफा एसोसिएशन आंदोलन की चेतावनी दी है।

# मझवार जनजाति ने नशा मुक्ति को लेकर समाज में जन जागरूकता लाने निकाली रैली चौकी प्रभारी को सोपा ज्ञापन

- संवाददाता -
लखनपुर, 12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

सरगुजा जिले के लखनपुर क्षेत्र के आदिवासी बाहुल्य ग्राम पटकुरा में मझवार जनजाति के द्वारा समाज को नशा मुक्त कराने को लेकर जन जागरूकता रैली निकाली और कुन्नी चौकी प्रभारी को ज्ञापन सोपा है। ज्ञापन में उल्लेखनीय है की मझवार जनजाति समाज के वर्तमान तथा भविष्य पीढ़ी को नशा से बचाकर अमन शांति स्थापित करने आपस में प्रेम आपसी सहयोग तथा भाईचारे को मजबूती प्रदान करने के लिए समस्त मझवार समाज में नशा मुक्ति अभियान चलाया जा रहा है। नशा मुक्ति अभियान और नशा मुक्त कराने को लेकर समाज के लोगों ने गांव में रैली निकाल लोगो को जागरुक किया तथा बड़ी संख्या में मझवार समाज के लोग कुन्नी पुलिस चौकी पहुंच चौकी प्रभारी को ज्ञापन सौंपा है।

CMYK

# स्विट्जरलैंड के दौरे पर पहुंचे विदेश मंत्री एस.जयशंकर, जेनेवा में महात्मा गांधी को अर्पित की श्रद्धांजलि

**स्विट्जरलैंड,12 सितम्बर 2024।** जर्मनी और सऊदी अरब की अपनी यात्रा समाप्त करने के बाद स्विट्जरलैंड पहुंचे भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अपने दौरे की शुरुआत महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देकर की। वहीं सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट में, विदेश मंत्री ने कहा, महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देकर अपनी जेनेवा यात्रा की शुरुआत की।

### स्विस विदेश मंत्री के साथ जयशंकर की बैठक

बता दें कि अपनी जेनेवा यात्रा के दौरान, जयशंकर स्विस विदेश मंत्री से मुलाकात करेंगे और दोनों देशों के बीच घनिष्ठ साझेदारी की समीक्षा करेंगे और द्विपक्षीय संबंधों को और बढ़ाने के रास्ते भी तलाशेंगे। विदेश मंत्रालय (एमईए) ने पहले एक बयान में कहा, जेनेवा बड़ी संख्या में संयुक्त राष्ट्र निकायों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों का घर है। इस यात्रा के दौरान, विदेश मंत्री उन अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रमुखों और प्रतिनिधियों से मिलेंगे जिनके साथ भारत सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है।

### जर्मन चांसलर से भी मिले थे विदेश मंत्री

इससे पहले बुधवार को विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने बर्लिन में जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज से मुलाकात की और उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से व्यक्तिगत शुभकामनाएं दीं। वहीं शोल्ज से अपनी मुलाकात के बारे में एक्स पर एक पोस्ट साझा करते हुए जयशंकर ने लिखा, आज बर्लिन में चांसलर ओलाफ शोल्ज से मिलकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। प्रधानमंत्री मोदी की ओर से व्यक्तिगत शुभकामनाएं दी।

### जर्मनी के रक्षा मंत्री से भी की थी मुलाकात

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा, 7वें अंतर-सरकारी परामर्श के लिए उनकी भारत यात्रा का बेसब्री से इंतजार है। इस दौरान विदेश मंत्री जयशंकर ने जर्मनी के रक्षा मंत्री बोरिस पिस्टोरियस से भी मुलाकात की और सुरक्षा मुद्दों पर चर्चा की। एक्स पर अपनी मुलाकात के बारे में विवरण साझा करते हुए उन्होंने कहा, जर्मनी के रक्षा मंत्री बोरिस पिस्टोरियस के साथ एक उपयोगी बैठक की, इस दौरान सुरक्षा मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान किया और रक्षा संबंधों में प्रगति की सराहना करता हूं।

### जर्मन विदेश मंत्री से मिले थे एस.जयशंकर

वहीं अपनी यात्रा के दौरान एस. जयशंकर ने अपनी जर्मन समकक्ष एनालेना बारबॉक से मुलाकात की। दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय संबंधों के संपूर्ण पहलुओं की समीक्षा की, विशेष रूप से अक्टूबर 2024 में नई दिल्ली में आगामी 7वें भारत-जर्मनी अंतर-सरकारी परामर्श (आईजीसी) की नींव रखने के उद्देश्य से।

### जर्मन चांसलर के सुरक्षा नीति सलाहकार के साथ अहम चर्चा

विदेश मंत्रालय ने एक आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि दोनों मंत्रियों ने कहा कि जर्मन व्यवसायों का 18वां एशिया प्रशांत सम्मेलन (एपीके) अगले महीने नई दिल्ली में आयोजित किया जाना है, जो भारत और जर्मनी के बीच व्यापार-से-व्यापार साझेदारी को और गहरा करेगा। दोनों नेताओं ने यूक्रेन, हिंद-प्रशांत और पश्चिम एशिया समेत आपसी हित के क्षेत्रीय और वैश्विक मामलों पर भी चर्चा की। उन्होंने जर्मन चांसलर के विदेश और सुरक्षा नीति सलाहकार जेन्स प्लोटनर के साथ भी चर्चा की।

## रूसी राष्ट्रपति से एनएसए अजीत डोभाल ने की मुलाकात,पुतिन ने रखा पीएम मोदी के साथ बैठक का प्रस्ताव

**मॉस्को, 12 सितम्बर 2024।** ब्रिक्स देशों के एनएसए सम्मेलन में भाग लेने रूस गए भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने रूस के राष्ट्रपति से रूस-यूक्रेन संघर्ष को सुलझाने को लेकर चर्चा की। साथ ही रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय बैठक का प्रस्ताव रखा।

एनएसए सम्मेलन से अलग भारत के एनएसए अजीत डोभाल ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ सेंट पीटर्सबर्ग में बैठक की। पुतिन ने कहा कि हम अपने अच्छे दोस्त मोदी का इंतजार कर रहे हैं। रूस के राष्ट्रपति ने 22 अक्तूबर को कजान में होने वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के मौके पर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय बैठक का प्रस्ताव रखा। बैठक में पीएम मोदी को उनकी मॉस्को यात्रा के दौरान हुए समझौतों को लेकर हुई प्रगति के बारे में बताया जाएगा। साथ ही भविष्य की योजनाओं की रूपरेखा तैयार की जाएगी।

रूस के भारतीय दूतावास के मुताबिक एनएसए अजीत डोभाल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से रूसी राष्ट्रपति का आभार व्यक्त किया। उन्होंने नरेंद्र मोदी की यूक्रेन यात्रा के बारे में भी जानकारी दी। इससे पहले अजीत डोभाल ने सेंट पीटर्सबर्ग में अपने रूसी समकक्ष सर्गेई शोइगु से मुलाकात की। दोनों शीर्ष अधिकारियों की बैठक में यूक्रेन संघर्ष का समाधान खोजने में भारत की संभावित भूमिका और %पारस्परिक हितों% के महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई।

### रूस और यूक्रेन दोनों देश भारत की मध्यस्थता के लिए तैयार

गौरतलब है कि अजीत डोभाल की रूस यात्रा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यूक्रेन यात्रा के ढाई सप्ताह बाद हो रही है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की के साथ अपनी मुलाकात में प्रधानमंत्री मोदी ने रूस यूक्रेन युद्ध तुरंत समाप्त करने की अपील की थी और कहा था कि भारत क्षेत्र में शांति बहाली के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार है। वहीं पिछले दिनों एक कार्यक्रम के दौरान रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भी अपने बयान में कहा था कि रूस-यूक्रेन युद्ध की समाप्ति के लिए वह भारत, चीन और ब्राजील की मध्यस्थता को स्वीकार कर सकते हैं।

## बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया की तबीयत बिगड़ी...अस्पताल में भर्ती कराया गया

**ढाका, 12 सितम्बर 2024।** बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री खालिदा जिया को गुरुवार एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। 79 वर्षीय बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) की अध्यक्ष अपने आवास गुल्शन से रात के 1:40 बजे एवरकेयर अस्पताल पहुंचीं। बीएनपी मीडिया सेल के सदस्य सायरुल कबीर खान ने इसकी जानकारी दी। उनके फिजिशियन प्रोफेसर एजेडएम जाहिद हुसैन ने बताया कि मेडिकल बोर्ड ने उन्हें कुछ टेस्ट कराने को कहा है। अस्पताल में भर्ती होने के बाद उन्हें प्राइवेट केबिन में रखा गया है।

फिजिशियन ने कहा, टेस्ट के नतीजों की समीक्षा के बाद उनके उपचार के लिए तारीख निर्धारित की जाएगी। 21 अगस्त को खालिदा जिया 45 दिनों के इलाज के बाद घर लौट आई थीं। बता दें कि पिछले पांच वर्षों से बांग्लादेश की पूर्व पीएम नजरबंद थीं। इस साल छह अगस्त को राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन के आदेश के बाद उन्हें मुक्त कर दिया गया। पांच अगस्त को शेख हसीना के नेतृत्व वाली आवामी लीग के पतन के बाद जिया को उनके खिलाफ सभी आरोपों से मुक्त कर दिया गया।

बीएनपी प्रमुख लंबे समय से विभिन्न बीमारियों से जूझ रही हैं, जिसमें लिवर सिरोसिस, अर्थराइटिस, मधुमेह, और समस्याएं शामिल हैं। 23 जून को उनके चेस्ट में पेसमेकर लगाया गया था। 2021 में लीवर सिरोसिस का पता लगने के बाद से उनके डॉक्टर उन्हें विदेश भेजने की सिफारिश कर रहे हैं। इस महीने खालिदा जिया को पांच अलग-अलग मामलों में बरी कर दिया गया था। उन्होंने 1991-1996 और 2001-2006 तक प्रधानमंत्री का पद संभाला।

## प्रशासनिक टीम ने एलुमिना प्लांट हादसे में शोकाकुल परिजनों से की मुलाकात

### » मुआवजा राशि सौंपने की कार्यवाही जारी

**- संवाददाता - अम्बिकापुर,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।**

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय द्वारा सरगुजा जिले के ग्राम सिलसिला में संचालित मां कुदरगढ़ी एलुमिना प्लांट में गत रविवार को हुए औद्योगिक हादसे पर संज्ञान लेते हुए घटना की जांच और मुआवजा के आदेश दिए गए जिसके परिपालन में तत्काल कार्यवाही करते हुए जिला प्रशासन प्रशासन की दो टीम मृतकों के गृहग्राम पहुंचकर उनके परिजनों से मुलाकात कर रही है और उनके द्वारा मुआवजा राशि चेक सौंपने की कार्यवाही जारी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार हादसे में मृतक करणवीर मांझी के पिता कारू मांझी को, मृतक रामेश्वर मांझी की पत्नी श्रीमती सुनैना देवी को ग्राम के सरपंच, ग्रामवासी एवं थाना प्रभारी फतेहपुर जिला गया (बिहार) के उपस्थिति में 15 लाख रुपए का चेक प्रदाय किया गया। वहीं दूसरी टीम के द्वारा मृतक प्रिंस राजपूत के पिता धनराज सिंह राजपूत निवासी बिछिया, जिला मंडला को स्थानीय पुलिस की मौजूदगी में 15 लाख रुपए का चेक प्रदान किया गया। की टीम द्वारा गुरुवार को मृतकों के परिजनों से मुलाकात कर मुआवजा प्रदाय की कार्यवाही शुरू कर दी है।

## पूर्व डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव पहुंचे लखनपुर,कार्यकर्ताओं से मुलाकात कर नगरीय निकाय चुनाव को लेकर किया चर्चा

**- संवाददाता - लखनपुर,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।**

छत्तीसगढ़ के पूर्व डिप्टी सीएम गुरूवार को लखनपुर पहुंचे जहां कांग्रेस कार्यालय में कांग्रेस पदाधिकारी कार्यकर्ताओं से मुलाकात की है पूर्व डिप्टी सीएम टी एस सिंहदेव ने कांग्रेस पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं से आगामी नगरीय निकाय चुनाव को लेकर विषय वार चर्चा करते हुए प्रत्येक वार्ड में कमेटी का बनाकर उम्मीदवारो तैय करने कहा हैं। साथ ही मिडिया से चर्चा के दौरान छत्तीसगढ़ के पूर्व डिप्टी सीएम और स्वास्थ्य मंत्री टी एस सिंह देव ने सरकार को घेरते हुए प्रदेश में और सरगुजा जिले सहित संभाग में हो रही घटनाओं पर चिंता व्यक्त व्यक्त किया है। उन्होंने सरगुजा जिले में डायरिया से हो रही मौतों की बात हो या कानून व्यवस्था की बात सभी प्रकार से व्यवस्थाएं चरमरा गई है।लेकिन मौजूदा हालात में हो रही घटनाएं सरकार पर कई सवाल खड़े कर रहे हैं सरकार को इस और विचार करने की जरूरत है। कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष कृपा शंकर गुप्ता, विक्रमादित्य सिंह देव ,अमित सिंह देव,रणविजय सिंह देव,वीरेंद्र सिंह देव, रमेश जायसवाल सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

## सिंघाड़ा को बचाने तालाब में जहर डालने से हजारों की संख्या में मछलियों की मौत

### » मछली को पकड़ कर घर ले जाने के लिए लोगों में मची होड़...

**- संवाददाता - लखनपुर,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।**

सरगुजा जिले के नगर पंचायत लखनपुर के वार्ड क्रमांक 4 में लगभग 10 एकड़ जमीन में फैली बोहिता तालाब में ठेकेदार के द्वारा मछली पालन और सिंघाड़ा की खेती की जाती है 11 सितंबर को सिंघाड़ा की फसल को बचाने के लिए तालाब में जहर डाल दिया गया जिसमें हजारों की संख्या में छोटी बड़ी मछलियों की मौत हो गई जिसे आसपास के लोगों के द्वारा मछली को पड़कर खाने वह बेचने के लिए ले जाया जा रहा हैं । जहर से मरने वाली मछली को लोग बेचने व खाने के ले जा रहे हैं लोगों की खाने के बाद उनके शरीर में क्या प्रभाव पड़ेगा यह सोचने वाली बात है उसके बावजूद भी लोग पकड़ कर ले जा रहे हैं।

तालाब ठेकेदार के मजदूर गब्बर राम से पूछने पर कहा कि सिंघाड़ा की फसल को मछली के द्वारा खा लिया जा रहा था जिस वजह से जहर डालकर मछली को मारना पड़ रहा हैं।

नगर पंचायत अध्यक्ष सावित्री दिनेश साहू सुबह मॉर्निंग वॉक के लिए घूम रहे थे सैकड़ो मछली मरे हुए थे जिससे तालाब से बदबू आ रहा था द्य जब इसकी जानकारी ली गई तो पता चला कि तालाब ठेकेदार के द्वारा मछली को मारने के लिए जहर डाला गया है नगर पंचायत अध्यक्ष सावित्री दिनेश साहू के द्वारा लोगों से अपील किया गया है कि तालाब के पास अपने जानवर को लेके न जाएं व मरी हुई मछली को कोई खाने के लिए ना ले जाए।

पार्षद अमित बारी, चंद्रभान सिंह ,शहाबुद्दीन सुभक साहू व नगरवासी काफी आक्रोशित है क्योंकि इसी तालाब की मेड़ में लोगो का आना-जाना तो वही मवेशी, पक्षी ,जानवर भी तालाब का पानी पीते हैं जिससे मछली व, पानी का उपयोग करने से परेशानी की हो सकती है जनप्रतिनिधि और ग्रामीण ने मांग की है कि ठेकेदार के ऊपर जांच कर कड़ी कार्रवाई की जाए ताकि इस तरह से दोबारा तालाब मैं जहर डालकर मछली मारने का कृत ना करें।

## खड़गवां विकास खंड में बिजली की रोजाना आवाजाही ने लोगों का जीना मुश्किल

### मेंटेनेंस के नाम पर विभागीय अमला कर रहा खानापूर्ति,जिससे क्षेत्र के लोगों में बढ़ रहा है जनआक्रोश

**- राजेन्द्र शर्मा(बब्बी) - खड़गवां,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।**

खड़गवां विकास खंड में बिजली की आवाजाही से लोग काफी परेशान दिखाई दे रहे है। बिजली बंद का कोई निश्चित समय नही है और हर दस मिनट के अंतराल में जब चाहे तब बिजली बंद कर दी जा रही है। जिस समस्या से लोग जूझ रहे है। बिजली विभाग द्वारा मेंटेनेंस के नाम पर बारिश पूर्व बिजली बंद किया जाता रहा है किंतु जैसे ही बरसात लगी वैसे ही बिजली विभाग की सारी मेंटेनेंस की पोल खुलकर रह गई है। क्षेत्र में सबसे गंभीर समस्या यदि है तो वह है विद्युत समस्या जिसका सुधार न हो पाना चिंतनीय है। कभी इंसुलेटर फाल्ट तो कभी जंफर उड़ना और कभी केबल टूटना और कभी बिना सूचना के पेड़ गिराने जैसे समस्या बताते हुए असमय बिजली बंद कर दी जाती है और बिजली के बंद होते ही अधिकारी अपना और विभागीय कर्मचारियों का मोबाइल नंबर कवरेज क्षेत्र कर दिया जाता है जब अधिकारी ऐसे है कि बिजली समस्या को लेकर फोन लगाने पर शायद जवाब देना मुनासिब नही समझते और अगर धोखे से मोबाइल उठा लिये तो भारी- भरकम व्यस्तता का हवाला देकर फोन काट देते है और बिजली की समस्या का परमानेंट निदान के लिए 132/33 केवी का सब स्टेशन बना हुआ है वर्तमान बारिश का मौसम होने के कारण जमीन पर रेंगने वाले विषैले जंतुओं के काटने का खतरा बना रहता है। ऐसे में दिन के अलावा रात्रि बिजली बंद होने से वे जहरीले जंतु स्पष्ट नही दिख पाने से उनके काटने का खतरा दुगुना बढ़ जाता है।

### हल्की बारिश होते ही खुलती हैं बिजली मैंटिनेंस की पोल

हल्की बारिश में ही घंटों बिजली बंद रहती है खड़गवां बिजली विभाग के द्वारा बरसात से पहले सभी क्षेत्र के फिडर का मेंटिनेंस किया जाता है उसके बाद भी हल्की बारिश में घंटों बिजली बंद रहती है तो बरसात से पूर्व क्या मेंटिनेंस किया जाता है या फिर बिजली बंद कर मेंटिनेंस के नाम पर खानापूर्ति किया जाता हैं खड़गवां वासी इस बिजली बंद होने कि समस्या से कब मुक्ति पाएंगे ?

### ग्रामीण क्षेत्रो में बिजली की हालत दयनीय

ग्रामीण इलाकों में तो बिजली का हाल बेहाल है और सुधार व्यवस्था की हालत भी दयनीय है जिसके कारण ग्रामीण वर्ग ज्यादातर लालटेन युग मे जीवन बिताने को मजबूर है।

ग्रामीण क्षेत्र की बिजली यदि एक बार चली जाए तो कई-कई घंटों तक दर्शन ही नही होते और गांव के लोगों को चिमनी की रोशनी में रात गुजारनी पड़ती है। और अगर बिजली ठीक- ठाक रहे तो लो वोल्टेज की समस्या बनी रहती है। जिससे इलेक्ट्रॉनिक्स सामान या तो जल्दी खराब हो जाते है या फिर शो पीस बनकर रह जाते है। जिसके निदान के लिए विद्युत विभाग कभी गंभीर नही दिखा और जब से खड़गवां विधुत विभाग में नये अधिकारी की पोस्टिंग हुई है तब से खड़गवां क्षेत्र में विधुत की समस्या दिनों दिन बढ रही है और अधिकारी फोन भी नहीं उठाते इस तरह खड़गवां का विधुत विभाग चल रहा है।

### व्यवसाय पर पड़ रहा बहुत बड़ा असर

बिजली की आवाजाही से व्यापारियो के व्यवसाय पर भी इसका असर देखने को मिल रहा है। फोटोकॉपी सेंटर, वेल्डिंग हालर मिल, होटल,थाना तहसील कार्यालय जनपद पंचायत आदि आनलाइन कार्य होते हैं बैंक जैसे संस्थान में इसका सीधा असर व्यवसाय पर भी पड़ रहा है। जिसे लेकर व्यवसायी वर्ग काफ़ी आक्रोशित है।

### आखिर कब सुधरेगी नगर की विद्युत व्यवस्था...?

खड़गवां के लिए विद्युत की समस्या कोई नई बात नही है। पहले भी यहा बिजली की समस्या से क्षेत्रवासियों को जूझना पड़ रहा था और आज भी उक्त समस्या बरकरार है। बिजली सुधार को लेकर अनेक जनप्रतिनिधि भी प्रयास कर चुके है लेकिन इससे अभी तक निजात नही मिल पाया। बिजली समस्या को लेकर अब क्षेत्रवासी कड़े आंदोलन करने की बात कह रहे है। आखिर इस समस्या से क्षेत्र को कब निजात मिल पाएगा..?

# सहायक आयुक्त आदिवासी विकास विभाग

# क्या परियोजना कार्यालय के कर्मचारियों की गिरफ्त में ?

**परियोजना विभाग का कर्मचारी सहायक आयुक्त का भर रहा कान,कर रहा अपनी मनमानी**

**संदीप परिहार नाम का कर्मचारी कर रहा सहायक आयुक्त को गुमराहः सूत्र**

**संदीप परिहार का एमसीबी जिले में हो चुका है तबादला फिर भी कोरिया जिले के विभागों की नहीं दे रहा फाइलःसूत्र**

**मलाईदार सभी शाखा सम्हालता है खुद संदीप परिहार,सहायक आयुक्त को खुद देता है निर्देश**

-रवि सिंह-
बैकुण्ठपुर,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

कोरिया जिले में आदिम जाति कल्याण विभाग की सहायक आयुक्त के कान भरने का काम संदीप परिहार नाम का एक परियोजना विभाग का कर्मचारी कर रहा है और विभागीय जानकारों के द्वारा बताया जा रहा है की यह नहीं चाहता की कार्यालय में उसकी मनमर्जी के विरुद्ध कोई काम हो। परियोजना विभाग का उक्त कर्मचारी सहायक आयुक्त का खास सलाहकार बना हुआ है वहीं उसका तबादला भले ही एमसीबी जिले में हो गया है लेकिन वह कोरिया जिले को भी अपने हिसाब से ही चला रहा है वह एक तरह से दोनों जिले का जिम्मा सम्हाल रहा है और उसी के दिए निर्देश पर सहायक आयुक्त कार्य करती हैं। संदीप परिहार को लेकर बताया जा रहा है की विभाग के ही कर्मचारी उसको लेकर काफी अक्रोशित हैं क्योंकि उसका काम ही है सहायक आयुक्त का कान भरना और अपनी मनमानी चलाना,संदीप परिहार को लेकर यह भी बताया जा रहा है की यदि उसके अब तक के कार्यकाल की जांच की जाए तो काफी कुछ ऐसा पता चल सकता है जो उसके दोषपूर्ण कार्यप्रणाली को साबित करने के लिए काफी है। वर्तमान की जिले की सहायक आयुक्त को लगातार दिग्भ्रमित करना ही उसका मुख्य कार्य है और वह सलाहकार कम सहायक आयुक्त को निर्देशित करने वाला बना हुआ है जिसकी चर्चा विभाग में भी काफी है। मलाईदार विभाग में वह किसी अन्य को आने नहीं देना चाहता है वहीं अन्य कर्मचारियों से उसका व्यवहार भी काफी रूखा है। वैसे सूत्रों की माने तो फिलहाल वह कोरिया एमसीबी दोनों जिलों का काम खुद के जिम्मे रखे हुए है और वह अपनी मनमानी पर लगातार उतारू है।

### जून 2024 में हो चुका है नवीन जिले एमसीबी के लिए तबादला,अब तक नहीं छूट रहा कोरिया जिले का मोह

सूत्रों की माने तो जून माह में ही संदीप परिहार का तबादला नवीन जिले एमसीबी के लिए हो चुका है लेकिन उसका मोह अभी तक कोरिया जिले से छूट नहीं सका है। कार्यालय में उसका बराबर हस्तक्षेप बना रहता है कोरिया जिले के वहीं सहायक आयुक्त को वह खुद निर्देशित करता है। बता दें की वह कोरिया जिले के अपने समस्त प्रभार जरूर दूसरे को सौंप चुका है लेकिन वह अभी तक उन विभागों की फाइल नहीं सौंप रहा है जिससे प्रभार लेने वाला भी परेशान है।

### सभी मलाईदार विभाग का पूरा प्रभार अपने पास रखा है संदीप परिहार

बताता जा रहा है की सहायक आयुक्त को इस तरह वह अपने गिरफ्त में रखा हुआ है की वह सभी मलाईदार विभाग अपने पास रखा हुआ है। सभी विभाग जहां भी कुछ लाभ अनुचित मिल सकता है वहां वह किसी अन्य का हस्तक्षेप बर्दास्त नहीं करता है। संदीप परिहार एमसीबी जिले में सहायक आयुक्त बतौर काम कर रहा है और सर्वेसर्वा बना हुआ है क्योंकि सहायक आयुक्त को वह गिरफ्त में रखकर चल रहा है।

### नौकरी एमसीबी में शासकीय आवास कोरिया जिले में निवासरत

संदीप परिहार नौकरी एमसीबी जिले में कर रहा है वहीं वह निवास कोरिया जिले के मुख्यालय में परियोजना कालोनी के शासकीय आवास में कर रहा है। नियमानुसार उसे मुख्यालय में ही निवास करना चाहिए जबकि वह शासकीय आवास कोरिया जिले का हथियाकर बड़े दमदारी से जिले में ही निवास कर रहा है।। सभी नियम कायदों को वह दरकिनार करके अपना मुख्यालय कोरिया जिला मुख्यालय को बना रखा है।

### जांच होने पर संदीप परिहार की अनियमितताओं की खुलेगी पोलःसूत्र

सूत्रों की माने तो संदीप परिहार के कोरिया जिले के कार्यकाल सहित एमसिबी जिले के कार्यकाल की यदि जांच की जाए तो उसकी पोल खुल जायेगी। काफी कुछ ऐसा पता चल सकेगा जो उसकी अनियमितताओं सहित उसकी मनमानी को साबित करने के लिए काफी होगा।

### जनपद सहित अन्य विभागों को कार्य देने के बदले लेता था उनसे मोटी रकमःसूत्र

सूत्रों की माने तो आदिम जाति कल्याण विभाग अंतर्गत होने वाले निर्माण कार्यों को अन्य विभागों जनपद पंचायतों को देने के नाम पर वह मोटी रकम भी कमीशन के तौर पर वसूलता था। वह इस मामले में काफी लंबा खेल खेल चुका है। अब यदि जांच होगी तो इन बातों का भी खुलासा होगा।

### परियोजना में 275-1 जैसा मलाईदार शाखा देखता था संदीप परिहार

कोरिया जिले में संदीप परिहार परियोजना का 275-1 जैसा मलाईदार विभाग देखता था। वह इस शाखा का पूरा जिम्मा सम्हालता था और अधिकारियों को वश में करके अपनी मनमानी चलाता रहता था। वह जब स्थांतरित हुआ तब उसके द्वारा प्रभार तो बाबूलाल सहायक ग्रेड 3 को दे दिया गया लेकिन आज तक फाइल वह नहीं सौंप रहा यह सूत्र बताते हैं।

### शौचालय निर्माण मामले में जांच होने पर खुलेगी बड़ी अनियमितता की पोल

संदीप परिहार को लेकर यदि सूत्रों की ही माने तो उसने शैचालय निर्माण कार्य में जमकर भ्रष्टाचार किया है और कई ऐसे शौचालय निर्माण कार्यों को अनापत्ति जारी कर दी है जिनका कार्य ही पूर्ण नहीं हुआ है। शौचालय निर्माण की जांच से इसके भ्रष्टाचार की पोल खुल सकती है। घटिया निर्माण कार्यों की भी अनापत्ति जारी की है संदीप परिहार ने।

### आर ओ वाटर सप्लाई में भी घोटाले की आशंका

संदीप परिहार को लेकर सूत्र कई अन्य दावे कर रहे हैं और कई पोल वह खोलने तैयार हैं, सूत्रों का कहना है की परत दर परत ही उसकी करतूत सामने आएगी और आर ओ वाटर सप्लाई में भी भ्रष्टाचार से इंकार करना सही नहीं होगा जिसका भी जिम्मा संदीप परिहार ही सम्हाल रहा था।

---

**स्वच्छता ही सेवा अभियान-2024**

## आगामी 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक स्वभाव स्वच्छता-संस्कार स्वच्छता के लिए चलेगा अभियान

-संवाददाता-
कोरिया,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

कोरिया जिले में आगामी 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक स्वच्छता की अलग जगाने के लिए स्वभाव स्वच्छता-संस्कार स्वच्छता थीम पर स्वच्छता ही सेवा का संकल्प लेकर व्यापक गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। इस अभियान का समापन 2 अक्टूबर को स्वच्छ भारत दिवस के साथ होगा। इसके लिए कलेक्टर कोरिया श्रीमती चंदन त्रिपाठी ने विस्तृत दिशा-निर्देश जारी कर दिए हैं। उन्होने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन के लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रत्येक कोरिया वासी की जनभागीदारी नितांत आवश्यक है। इसके लिए सभी को जागरूक करने के साथ ही समेकित प्रयास से हम कोरिया को एक हरित कोरिया सुंदर कोरिया बनाएंगे। जिले में स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 क़ा आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम अनुसार 17 सितम्बर को जिला स्तर पर तालाब, पर्यटन स्थल की वृहद स्तर पर सामुहिक श्रमदान से साफ-सफाई कार्यक्रम, 18 सितम्बर को प्रत्येक ग्राम पंचायत में जहां कचरा एकत्र होता है ऐसे स्थलों का सामुहिक श्रमदान से सफाई कार्य, 19 सितम्बर को समस्त विद्यालय-महाविद्यालय की सामुहिक श्रमदान से सफाई कार्य का आयोजन, 20 सितम्बर को प्रत्येक विकासखण्ड से चिंहित 10 बड़े ग्राम पंचायत में श्रमदान एवं एक पेड़ माँ के नाम अंतर्गत वृक्षारोपण का आयोजन, 21 सितम्बर को नगरीय निकाय एवं ग्राम पंचायतों में स्वच्छता दौड़ का आयोजन, 22 सितम्बर को प्रेमाबाग मंदिर एवं परिसर की सामुहिक श्रमदान से साफ-सफाई, 23 सितम्बर को स्कूलों, महाविद्यालयों में स्वच्छता आधारित निबंध लेखन, पेटिंग, कविता लेखन, पोस्टर प्रतियोगिता तथा जीरो प्लास्टिक पर जिला स्तरीय आलेख का आयोजन, 24 सितम्बर को समस्त शासकीय कार्यालयों एवं संस्थाओं का श्रमदान से सफाई कार्यक्रम का आयोजन, 25 सितम्बर को ग्राम पंचायतों में निर्मित सामुदायिक शौचालय, सेग्रीगेशन शेड, नाडेप टेंक, तरल अपशिष्ट प्रबंधन हेतु निर्मित सामुदायिक सोख्ता गड्ढा इत्यादि के आस-पास साफ-सफाई कार्य का आयोजन, 26 सितम्बर को मानव श्रृंखला रामानुज विद्यालय से कुमार चौक बैकुण्ठपुर तक एवं स्वच्छता शपथ के माध्यम से स्वच्छता जागरूकता का आयोजन, 27 सितम्बर को विकासखण्ड स्तर पर स्वास्थ्य शिविर एवं सिंगल विंडो शिविर का आयोजन जिससे स्वच्छाग्रही दीदीयों को एक ही स्थान पर शासन की योजनाओं से जोड़ा जाना, 28 सितम्बर को प्रत्येक ग्राम पंचायतों में स्वच्छता रैली का आयोजन एवं स्कूलों में स्वच्छता शपथ कार्यक्रम का आयोजन, 29 सितम्बर को प्रत्येक ग्राम पंचायतों में मशाल रैली का आयोजन, 01 अक्टूबर को वेस्ट टू आर्ट तैयार कराना, स्वच्छता संबंधित क्वीज एवं छिब्बेट कराना तथा 02 अक्टूबर को जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में वेस्ट टू आर्ट का प्रदर्शनी, स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का समापन तथा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित की जायेगें।

---

## जनपद के विभाग प्रमुखों व उनके सहयोगियों को दिया गया प्रशिक्षण

-संवाददाता-
एमसीबी,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार भरतपुर विकासखंड के आहरण संवितरण अधिकारियों को जनपद पंचायत भरतपुर के सभाकक्ष में पेंशन प्रकरण निराकरण के संबंध में बैठक का आयोजन किया गया।

वित्त विभाग द्वारा समस्त विभाग अध्यक्ष राजस्व मंडल, कमिश्नरों, विभागाध्यक्षों और कलेक्टरों को इस संबंध में निर्देश जारी किए गए हैं। शासकीय विभाग या स्थापना, स्थानीय प्राधिकारी, शासकीय अभिकरण, शासन के किसी भी डीडीओ द्वारा (किसी कराधेय वस्तु या सेवा हेतु) रुपये 2.5 लाख से अधिक भुगतान होने पर, 2 प्रतिशत (1 प्रतिशत सीजीएसटी 1 प्रतिशत एस जीएसटी अथवा 2 प्रतिशत आईजीएसटी ) की दर से स्रोत पर कटौती जीएसटी - टीडीएस किया जाना है। अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार सभी शासकीय विभागों तथा स्थानीय प्राधिकारियों को जीएसटी, के अंतर्गत स्रोत पर कटौतीकर्ता (टीडीएस डिटेक्टर) के रूप में रजिस्ट्रेशन लिया जाना है। विभागों द्वारा खरीदी जाने वाली सामग्री, मशीन- उपकरण, फर्नीचर, स्टेशनरी अथवा अन्य कोई भी वस्तुएं, निर्माण कार्यों एवं ठेकों (कॉन्ट्रैक्ट) तथा लिये जाने वाली किसी भी प्रकार की सेवाओं की राशि पर जीएसटी - टीडीएस करने के पश्चात्वर्ती माह की 10 तारीख तक रिटर्न जीएसटीआर-07 में प्रस्तुत किया जाना है। वित्त निर्देश 12/2024 के तहत समस्त कोषालयों, निर्माण विभागों, वन विभागों के भुगतान प्राधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि आहरण एवं संवितरण अधिकारियों द्वारा वस्तु एवं सेवा प्रदाता के भुगतान सम्बन्धी प्रस्तुत देयकों में प्रदायकर्ताओं की जीएसटीआईएन को चिन्हांकित करने की व्यवस्था की जाए तथा देयकों के भुगतान के पूर्व यह भी सुनिश्चित किया जाए कि प्रदायकर्ता द्वारा दिया गया जीएसटीआईएन वर्तमान सक्रिय/वैध हो।

बैठक में एसडीएम प्रवीण भगत भरतपुर, सीईओ रतन दास जनपद पंचायत की उपस्थिति में जिला कोषालय अधिकारी सी.एस. सर्राफ, सहायक कोषालय अधिकारी पुष्पेंद्र प्रजापति व उपकोषालय अधिकारी विक्रांत सिंह परिहार के द्वारा अन्य आहरण एवं संवितरण अधिकारियों को जीएसटी की विभिन्न बिन्दुओं की जानकारी दी।

---

## कृषि विज्ञान केन्द्र में स्वर्णीम जयंती मशाल समारोह का आयोजन

-संवाददाता-
कोरिया,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

कृषि विज्ञान केन्द्र में आज स्वर्ण जयंती मशाल यात्रा का आयोजन किया गया। यह समारोह देश भर के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रों, की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में मशाल यात्रा के रुप में मनाया जा रहा है। कोरिया में पहुंची मशाल को समारोह में कृषि विज्ञान केन्द्र, अम्बिकापुर को सौंपा गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली से निकली मशाल देश के प्रत्येक कृषि विज्ञान केन्द्रों से गुजरेगी इसी तारतम्य में स्वर्ण जयंती मशाल कृषि विज्ञान केन्द्र कोरबा से 11 सितम्बर को कृषि विज्ञान के कोरिया पहुंची थी जिसे समारोह के दौरान अगली यात्रा के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, अम्बिकापुर को सौंपा गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, में आयोजित स्वर्ण जयंती मशाल यात्रा के दौरान जिले के कृषकों का प्रषिक्षण कार्यक्रम एवं वैज्ञानिक परिरचर्चा का आयोजन किया जिसमें 25 से अधिक किसानों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर डॉ. डी. के. गुप्ता अधिष्ठाता स्व. डॉ. रामचन्द्र सिंह देख कृषि महाविद्यालय द्वारा कृषको की आय दुगनी करने हेतु उन्नत बीज, बीज उपचार व संतुलित उर्वरकों का उपयोग करने की सलाह दी गई और साथ ही कृषकों को खेती में लागत कम करने के लिए मषीनीकरण अपनाने हेतु सलाह दी गई। कृषि विज्ञान केन्द्र, अम्बिकापुर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. राजेश चौकसे, द्वारा कृषकों को सुनियोजित तरीके से प्राकृतिक खेती अपनाने की सलाह दी गई। इंजी. कमलेष कुमार सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, में चल रहे विभिन्न गतिविधियों से कृषकों को अवगत कराया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, कोरिया के तकनीकी मार्गदर्शन में आदिवासी कृषकों द्वारा शुकर पालन कृषकों को प्रषस्ति पत्र प्रदाय कर सम्मानित किया गया और कृषकों के खेती में आ रही समस्या के निदान हेतु कृषक वैज्ञानिक परिचर्चा की गई।

## स्वच्छता ही सेवा अभियान का शुप्रारंभ आज

-संवाददाता-
एमसीबी,12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण अंतर्गत स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 के भारत सरकार द्वारा शुभारंभ कार्यक्रम 13 सितंबर 2024 को अपराह्न 04:30 बजे से 06:30 बजे तक आयोजित किया जाना है। इस कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति अपेक्षित है। अतः आपके जिले के जनप्रतिनिधियों के साथ निर्धारित कार्यक्रम में वी.सी. के माध्यम से सहभागिता करने का कष्ट करेंगें। शिक्षा विभाग के द्वारा छात्र एवं छात्राओं के माध्यम से मानव श्रृंखला, कबाड़ से जुगाड, वेस्ट टू आर्ट,निबंध लेखन कर व्यक्तिगत स्वच्छता से जागरूक करने के लिए ग्रामीणों को प्रेरित करेंगे। सामूदायिक जागरूकता हेतु राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन महिला एवं बाल विकास विभाग, राष्ट्रीय स्वस्थ मिशन के माध्यम से स्व सहायता समूह की महिलाए, आगनबाड़ी कार्यकर्ता, मितानिन, शिक्षक रोजगार सहायकों की अहम भूमिका होगी। जिले के सैकड़ों सफाईकर्मी हेतु आयोजित होगा सुरक्षा शिविर, सफाई मित्र, स्वच्छाग्रही महिलाओं के बेहतर स्वस्थ और सुरक्षा की दृष्टि स्वस्थ विभाग और कल्याण शिविर के माध्यम से सफाई कर्मियों को शासकीय योजनाओं से लाभान्वित किया जायेगा। सामूदायिक जागरूकता हेतु स्वच्छता संगोष्ठी, स्वच्छता रथ, सेल्फी जॉन, स्वच्छता शपथ, श्रमदान और कल्चर फेस्ट से वृहद स्तर पर स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता अभियान चलाया जाएगा।

# स्वास्थ्य केंद्रों का आकस्मिक निरीक्षण अधिकारियों को दिए निर्देश - डॉ. अनिल शुक्ला

-संवाददाता-
एमसीबी, 12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

संभागीय संयुक्त संचालक स्वास्थ्य सेवा अधिकारियों के द्वारा आज जिला एमसीबी अंतर्गत विकासखंड खडगवा के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खड़गवां का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उपस्थिति पंजी का अवलोकन कर समय पर अपनी उपस्थिति कराये जाने हेतु खण्ड चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिये गए।तदउपरांत समस्त वार्ड महिला, पुरुष, प्रसव कक्ष, लैब, जन औषधि, औषधि वितरण कक्ष, एक्स-रे कक्ष, माईनर ओ.टी., कार्यालय इन सभी कक्षों का निरीक्षण किया गया। ड्यूटी स्टाफ को अस्पताल द्वारा दी जाने वाली स्वास्थ्य सुविधाएं सम्बंधित आवश्यक दिशा - निर्देश ड्यूटी रोस्टर राष्ट्रीय कार्यक्रमों के आई.सी.ई. को विधिवत रूप से अस्पताल परिसर संबंधित वार्डों में विधिवत चस्पा कराये जाने, अस्पताल में आने वाले मरीजों की बैठक की उचित व्यवस्था, अस्पताल परिसर एवं अस्पताल के भीतर साफ-सफाई का उचित ध्यान दिये जाने व बी.एम.डब्ल्यू. के तहत सूखा एवं गीला




मेडिकल वेस्टेज को पृथक-पृथक कोड़ेदान में रखने के निर्देष दिये गये। मरीजों को प्रदाय किये जाने वाले भोजन कक्ष(किचन) का निरीक्षण करते हुए भोजन प्रदाय करने वाले समूह को गुणवत्ता युक्त भोजन मरीजों को दिये जाने के निर्देष दिया गया। आयुष विंग का भी निरीक्षण किया गया राष्ट्रीय कार्यक्रमों का निर्धारित समय-सीमा में रिपोर्टिंग करने व मरीजों को बेहतर ढंग से स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराया जा सके इस हेतु खण्ड चिकित्सा अधिकारी को आवश्यक निर्देश दिये गये। 100 बिस्तर अस्पताल (सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चिरमिरी) का निरीक्षण करते हुए समस्त चिकित्सकों को मरीजों के परीक्षण सम्बंधित पंजी का नियमित संधारण करने, अस्पताल में आये मरीजों के बैठने की उचित व्यवस्था करने व नवीन अस्पताल भवन के अपूर्ण कार्यों को अविलम्ब गुणवत्ता पूर्वक पूर्ण कराते हुए निर्धारित समय-सीमा में नवीन अस्पताल में सम्पूर्ण सुविधा व छोटे-मोटे बिमारियों के ग्रसित मरीजों को अनावश्यक जिला चिकित्सालय बैकुंठपुर हेतु रेफर न करने, सम्पूर्ण अस्पताल परिसर एवं परिसर के अंदर साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखने व अस्पताल की सुरक्षा सम्बंधित गार्ड की व्यवस्था किये जाने, ऑनलाईन ओ.पी.डी. पर्ची जारी नहीं होने की स्थिति में मैनुअल पर्ची में मरीजों को परामर्श दिया जावे जिससे उन्हें अनावश्यक परेशानी न हो इस बात का विशेष ध्यान रखने का निर्देश दिया गया। अधिकारियों/कर्मचारियों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित कराने, ब्लड बैंक के पंजीयन का कार्य नियमानुसार अविलम्ब पूर्ण कराने के निर्देश प्रभारी चिकित्सा अधिकारी को दिये गये। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मनेन्द्रगढ़ का निरीक्षण किया गया, निरीक्षण के दौरान सर्वप्रथम अस्पताल की साफ-सफाई, कूड़ेदानों को ढ़कने, राष्ट्रीय कार्यक्रमों से संबंधित सुविधाओं को चस्पा करने, डायलिसिस यूनिट को प्रस्तावित तिथि अनुसार उदघाटन कार्य कराते हुए बेहतर डायलिसिस सुविधा मरीजों को प्रदान किये जाने, नर्सिंग स्टॉफ को डयूटी रोस्टर का संधारण, पुरूष एवं महिला हेतु निर्धारित वार्डों में ही पुरूष एवं महिला भर्ती रखने, आयुष विंग का भी निरीक्षण किया गया जिसमें पदस्थ महिला विशेषज्ञ द्वारा मरीजों को दी जा रही आयुष सम्बंधित जानकारी ली गई व उचित निर्देश दिये गये। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला एमसीबी में राष्ट्रीय कार्यक्रमों के समस्त नोडल अधिकारियों की उनकी कार्यक्रमों से संबंधित जैसे-आयुषमान कार्ड, कुष्ठ, एनेमिया, मलेरिया, एच.आई.व्ही., एन.सी.डी., टी.बी. व अन्य समस्त राष्ट्रीय कार्यक्रमों का सुचारू रूप से संचालन हो सके इस हेतु स्वयं विशेष रूचि लेते हुए कार्यक्रमों को सफल बनाने के निर्देश दिये गये साथ ही आगामी बैठक के पूर्व वर्तमान में दिये गये निर्देशो के पालन सम्बंधित पालन प्रतिवेदन मय जानकारी संभागीय कार्यालय को प्रेषित किये जाने के निर्देश दिये गये।

## संभाग स्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

सूरजपुर, 12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)। संभाग स्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता विगत दिवस को जिला-कोरिया के हाई स्कूल सरडी (मिनी स्टेडियम) ग्राउंड में सम्पन्न हुआ। कलेक्टर श्री रोहित व्यास एवं श्री राम ललित पटेल जिला शिक्षा अधिकारी के मार्गदर्शन में सूरजपुर की टीम ने बढ़चढ़कर भाग लिया। व्हॉलीबॉल यू-19 बालक सीनियर वर्ग की टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुये फाईनल मुकाबले में कोरिया को हराकर खिताब अपने नाम किया, वहीं बालिका सीनियर वर्ग में फाईनल मैच में कोरिया की टीम से 1-2 से रनरअप रही। खो-खो बालिका 19 सीनियर वर्ग सूरजपुर की टीम ने कोरिया को हराकर जीत हासिल की एवं खो-खो बालिका अंडर 17 जूनियर वर्ग फाइनल मैच कोरिया के साथ ड्रा के साथ मैच समाप्त हुआ।

इस अवसर पर जिला कोरिया के जिला शिक्षा अधिकारी श्री जे. के. गुप्ता, एवं सहायक जिला क्रीड़ा अधिकारी श्री भगत सर श्री शरदेन्दु कुमार शुक्ल सहायक जिला क्रीड़ा अधिकारी सूरजपुर. श्रीमती कौशल्या सिंह व्या.शि, श्री नन्दे कुमार सिंह, श्री गोविंद राम मिरी, श्री दया सिंह उईके, श्री रविन्द्र सिंह, श्री शंकर सुवन गोपाल, श्री विमल डुंगडुंग, श्री खेमचंद जायसवाल, श्रीमती शीला मजूमदार, श्रीमती शीला जायसवाल, श्रीमती बैजंती माला, सुश्री समीरा केरकेट्टा, श्रीमती अनिता भगत, श्री आशा प्रसाद, श्री संजय सिदार, श्री विक्की कुमार समेत समस्त खेल प्रेमी एवं खिलाड़ी उपस्थित रहे।।

## सेक्टर कुर्रोग और झिक्की में राष्ट्रीय कार्यक्रमों का किया गया समीक्षा

जशपुरनगर, 12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।
बगीचा विकासखंड के सेक्टर कुर्रोग और झिक्की में आज स्वास्थ विभाग के द्वारा राष्ट्रीय कार्यक्रमों का समीक्षा किया गया। समीक्षा बैठक में सिकल सेल पॉजिटिव में एस एस वालो हैड्रॉक्सीस ले रहे है या नही सुनिश्चित करने और एमसीडी प्लस सर्वे में संदिग्ध मरीजो की सूची बनाकर जानकारी विकासखंड में देने के निर्देश दिए गए। साथ ही सर्पदंश होने पर तत्काल स्वास्थ्य केंद्र में भेजने के लिए कहा गया। मौसमी बीमारियों के लिए अपने स्वास्थ्य संस्था में पर्याप्त मात्रा में औषधियों का भंडारण कर के रखने के लिए समझाइश दी गई। समीक्षा बैठक के दौरान आईडीएसपी की प्रतिदिन एंट्री करने और मलेरिया में पॉजिटिव पाए जाने पर गांव का सर्वे करने तथा पर्याप्त मात्रा में दवाई कहा गया। टीबी कार्यक्रम में लक्ष्यानुरूप लक्ष्य की प्राप्ति तथा प्रति एसएचसी 07 स्पुटम कलेक्शन के निर्देश दिए गए और प्रति पॉजिटिव के लिए एक निश्चय मित्र बनाने के निर्देश दिए गए। बैठक में कहा गया कि आयुष्मान कार्ड में सभी संभावित हितग्राहियों का कार्ड बनाना सुनिश्चित करे जिनका कार्ड बनना संभव है। आईपीडी के विरुद्ध में सत प्रतिशत आयुष्मान कार्ड ब्लॉक करने के निर्देश पीएचसी प्रभारी को दिए गए।

## पटवारी ऑनलाइन एप्प जिला स्तर पर तैयार

जशपुरनगर 12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।
कलेक्टर डॉ. रवि मित्तल के निर्देशानुसार जिले के पटवारियों हेतु पटवारी ऑनलाइन'' एप्प ज़िला स्तर पर तैयार किया गया है। जिसमें पटवारी प्रतिदिन अपने निर्धारित ग्राम में उपस्थिति दर्ज कर सकेंगे एवं इसके साथ उनके द्वारा किए गये कार्यों की जानकारी की प्रविष्टि कर सकेंगे। साथ ही राजस्व संबंधित समस्या के बारे में तहसील स्तर एवं जिले स्तर पर जानकारी प्राप्त करने में होगी आसानी। मोबाइल एप्लीकेशन में पटवारी प्रत्येक ग्राम में होने वाले कार्यों तथा अन्य आवश्यक जानकारी भी दर्ज कर सकेंगे। जिसकी तहसील एवं ज़िला स्तर पर मॉनिटरिंग किया जाएगा। इस संबंध में आज कलेक्टोरेट सभा कक्ष में पायलट प्रोजेक्ट के तहत प्रत्येक तहसील से पाँच-पाँच पटवारियों का सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के जिला प्रबंधक श्री नीलांकार बासु के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने बताया कि मोबाइल एप्लीकेशन में ज़िले के सभी ग्रामों की सूची एवं लोकेशन पूर्व में ही उपलब्ध होगी। जिसका पटवारियों के द्वारा उनका प्रारंभिक तौर पर सत्यापन किया जाना होगा। इसके पश्चात पटवारी अपने निर्धारित दौरे की तिथि में अपने ग्राम में उपस्थित होकर ऑनलाइन माध्यम से अपनी उपस्थिति एप्लीकेशन में दर्ज कर सकेंगे। इस अवसर पर डिप्टी कलेक्टर एवं प्रभारी अधिकारी भू-अभिलेख श्री ऋतुराज सिंह बिसेन, भू-अभिलेख अधीक्षक श्री राधेश्याम तिर्की, सहायक अधीक्षक श्री विष्णु गुप्ता एवं पटवारीगण उपस्थित थे। प्रशिक्षण के दौरान डिप्टी कलेक्टर श्री बिसेन ने पटवारियों को अपने भू-अभिलेख एवं राजस्व दस्तावेज़ो को अद्यतन रखने हेतु निर्देशित किया।

# मुख्यमंत्री श्री साय के निर्देश पर सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल छात्र की कराई गई समुचित इलाज की व्यवस्था

**अंकित अब पूरी तरह स्वस्थ परिजनों ने जताया मुख्यमंत्री श्री साय का आभार,परिजनों ने मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय में आर्थिक और मेडिकल सहायता के लिए दिया था आवेदन**

-संवाददाता-
जशपुरनगर, 12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय के द्वारा जरूरतमंदों की मदद करने का कार्य सतत रूप से जारी है। मुख्यमंत्री श्री साय के निर्देश पर ही एक वर्ष पहले सड़क दुघर्टना में गंभीर रूप से घायल ढोलचुवा निवासी छात्र अंकित की समुचित इलाज की व्यवस्था कराई गई। आज वह पूरी तरह से स्वस्थ है। अंकित के परिजनों ने मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय का आभार व्यक्त किया है, जिन्होंने त्वरित चिकित्सा सहायता प्रदान की और अंकित का समुचित इलाज सुनिश्चित किया। इस अवसर पर परिजनों ने सीएम कैंप कार्यालय बगिया का भी आभार जताया है।

### सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हुआ था अंकित

लगभग एक साल पहले, अंकित स्कूल जाते वक्त एक सड़क दुर्घटना का शिकार हुआ था। इस दुर्घटना में उसे गंभीर चोटें आई थीं और उसकी हालत नाजुक हो गई थी। परिजनों ने तुरंत उसे स्थानीय चिकित्सा केंद्र पहुंचाया, लेकिन हालात बिगड़ते देख उसे रायपुर के एक निजी अस्पताल में रेफर किया गया।

### मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय ने की समुचित इलाज की व्यवस्था

छात्र अंकित के परिजनों ने

मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय बगिया में आकर अपने बेटे के इलाज के लिए आर्थिक और मेडिकल सहायता के लिए आवेदन दिया था। मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय ने इस आवेदन पर त्वरित कार्रवाई की और अंकित के समुचित इलाज की व्यवस्था करवाई।

### मुख्यमंत्री के निर्देश पर हुआ समुचित इलाज

मुख्यमंत्री श्री साय के निर्देश पर अंकित को रायपुर के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने उसकी गंभीर चोटों का सफलतापूर्वक इलाज किया। इलाज के दौरान अंकित की शारीरिक और मानसिक स्थिति पर विशेष ध्यान दिया गया, जिससे वह धीरे-धीरे स्वस्थ होता गया। एक लंबे उपचार और रिहैबिलिटेशन के बाद, अंकित अब पूरी तरह से स्वस्थ हो चुका है।

### परिजनों ने सीएम साय का जताया आभार

अंकित की पूरी तरह से स्वस्थ होने के बाद, उसके परिवार ने मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय का आभार व्यक्त किया। परिजनों का कहना है कि अगर उन्हें समय पर मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय से मदद न मिली होती, तो शायद उनका बेटा इतनी जल्दी स्वस्थ न हो पाता।

### सीएम कैंप कार्यालय की त्वरित सेवा

मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय बगिया में दिए गए आवेदन पर 5 मिनट के भीतर फोन कॉल और त्वरित कार्रवाई ने यह साबित किया है कि राज्य सरकार जनता की समस्याओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। लोगों की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को प्राथमिकता देते हुए सरकार ने अंकित के इलाज के लिए तुरंत सभी आवश्यक कदम उठाए, जिससे उसका जीवन बचाया जा सका। यह घटना राज्य में प्रशासनिक तत्परता और जनता के प्रति संवेदनशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

# जिले के आंगनबाड़ी केंद्रों में वजन त्यौहार का हुआ शुभारम्भ

**01 से 30 सितम्बर तक संचालित किया जा रहे है पोषण माह**

-संवाददाता-
जशपुरनगर, 12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

जिले को कुपोषण से मुक्त करने के लिए महिलाओं और बच्चों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने और उनके पोषण संबंधित देख-भाल के लिए पोषण माह का आयोजन जिले में किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय पोषण माह के साथ ही 12 से 23 सितम्बर जिले के समस्त आंगनबाड़ियों में वजन त्यौहार का शुभारंभ गुरुवार को जनप्रतिनिधियों द्वारा किया गया। उल्लेखनीय है कि पोषण अभियान अंतर्गत बच्चों के वजन में बढ़ोत्तरी को मापने के साथ ही सामुदायिक जागरूकता का कार्य भी किया जाएगा। वजन त्यौहार के दौरान लिए गए बच्चों के वजन सहित अन्य विवरण को महिला और बाल विकास विभाग के विभागीय पोर्टल पर दर्ज किया जाएगा। पोषण माह के दौरान सुपोषण चौपाल, अन्नप्राशन दिवस, परिवार चौपाल, पोषण मेला, व्यंजन प्रदर्शन जैसे आयोजन पंचायत और शहरी क्षेत्रों में किए जा रहे हैं। पोषण के प्रति बच्चों को जागरूक करने के लिए स्कूलों में नारा लेखन, निबंध, चित्रकला और दीवार लेखन प्रतिस्पर्धाएं भी आयोजित की जाएंगी। पोषण माह में एनीमिया, वृद्धि निगरानी, पूरक पोषण आहार, पोषण भी पढ़ाई भी, गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदाय हेतु तकनीक का प्रयोग और समग्र पोषण पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में भी समूह बैठक में वजन त्यौहार के बारे में चर्चा की जा रही है। ग्रामीण महिलाओं से चर्चा के दौरान 0 से 06 साल के बच्चे, किशोरी बालिकाओं की खान-पान और स्वास्थ्य देखभाल के बारे में बताया जा रहा है। गर्भवती महिलाओं को पौष्टिक आहार भोजन में शामिल करने का आग्रह किया जा रहा है।

### तपकरा में जनपद उपाध्यक्ष द्वारा किया गया शुभारंभ

कलस्टर तपकरा परियोजना में वजन त्यौहार का शुभारंभ जनपद उपाध्यक्ष राजकपूर राम के द्वारा किया गया। जहां बच्चों का वजन लेकर उनका पोषण स्तर रिपोर्ट कार्ड भी तैयार गया। इसके साथ ही अभिभावकों के समक्ष उनके बच्चों को पोषण स्तर की जानकारी देते हुए अभिभावकों से बच्चों के लिए उनकी उम्र के अनुसार उचित पोषण आहार के बारे में चर्चा किया गया तथा हर महीने अपने बच्चों का वजन कराने एवं घरों में उचित देखभाल एवं स्वच्छता के बारें में समझाइश देते हुए कुपोषण से बचाव हेतु व्यवहार परिवर्तन पर महत्वपूर्ण चर्चा किया गया।

### जिले के 4 हजार से अधिक आंगनबाड़ी केंद्रों में चलाया जा रहा है पोषण माह अभियान

जशपुर जिले के लगभग 4315 आंगनबाड़ी केंद्रों में पोषण माह अभियान चलाया जा रहा है । जिसका लाभ जिले के 76 हजार से अधिक बच्चों को प्राप्त होगा। जिसमें 0 से 6 तक के बच्चों का वजन निर्धारित तिथि तक कलस्टरवार तिथि का निर्धारण करते हुए कलस्टरवार समस्त आंगनबाड़ी केन्द्रों में बच्चों का वजन लिया जायेगा। कम वजन वाले बच्चों को चिन्हित कर कुपोषण की स्थिति का पता लगाया जाएगा। इस अभियान में जनसामान्य के लिए भी अपने बच्चे के वजन की एन्ट्री की व्यवस्था की गई है। इसके लिए की विभाग की क्यूआर कोड का उपयोग कर अपने बच्चे के वजन की एंट्री ऑनलाइन कर सकेंगे। इसके लिए मोबाईल नम्बर उनका यूजर आईडी होगा तथा प्राप्त ओटीपी से ऑनलाइन एंट्री कर सकेंगे।

# जिले के 22 परीक्षा केंद्रों में होगा हॉस्टल अधीक्षक परीक्षा

-संवाददाता-
एमसीबी, 12 सितम्बर 2024 (घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ व्यावसायिक परीक्षा मण्डल रायपुर के द्वारा 15 सितंबर 2024 दिन रविवार को छात्रावास हॉस्टल अधीक्षक (ङ्मा्स्240) की परीक्षा दोपहर 12:00 से 02:15 बजे तक जिले के 22 परीक्षा केंद्रों में आयोजित की जायेगी। परीक्षा को सुचारू रूप से संचालन हेतु पर्यवेक्षक एवं अधिकारियों को नियुक्त किया गया है। नियुक्त अधिकारी परीक्षा की गोपनीय सामग्री परीक्षा दिनांक 15 सितंबर 2024 को प्रातः 10:00 बजे अनिवार्य रूप से जिला कोषालय मनेंद्रगढ़ स्ट्रॉग रूम से प्राप्त करना सुनिश्चित करेंगे तथा परीक्षा समाप्ति पश्चात् समन्वयक, प्राचार्य शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेंद्रगढ़ जिला मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर के पास जमा करेंगे। अधिकारियों एवं परीक्षा केंद्र इस प्रकार है। तरूण कुमार एक्का को 42001 शासकीय विवेकानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय मनेंद्रगढ़, शैलेश कुमार गुप्ता को 42002 शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मनेंद्रगढ, विनय त्रिपाठी को 42003 शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मनेंद्रगढ़(ई.), सुश्री वैशाली सिंह को 42004 शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मनेंद्रगढ (टी.), विकास मिश्रा को 42005 शासकीय हायर सेकेन्ड्री स्कूल लालपुर मनेंद्रगढ, अनिल चौरसिया को 42006 संत जोसेफ स्कूल झगराखाण्ड, अजय कुमार पैकरा को 42007 सरस्वती विकास विद्यालय मनेंद्रगढ, एस.एस. पैकरा को 42008 विजय इंग्लिश मिडियम स्कूल मनेंद्रगढ, सी.पी.साहू को 42009 दिल्ली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल मनेंद्रगढ़, एन.पी. सिंह को 42010 सेंट पैट्रीक एकाडमी स्कूल चौघड़ा मनेंद्रगढ़, लाल सिंह आर्मो को 42011 ब्लोसम ऐकेडमी स्कूल मनेंद्रगढ़, सुश्री शशीकला पैकरा को 42012 यूनिवर्सल पब्लिक स्कूल मनेंद्रगढ़, दयानंद तिग्गा को 42013 खालसा हायर सेकेन्ड्री इंग्लिस मिडियम स्कूल मनेंद्रगढ़, संजय श्रीवास्तव 42014 सरस्वती शिशु मंदिर मनेंद्रगढ़, सुश्री विनिता चौरासे को 42015 सरस्वती शिशु मंदिर झगराखण्ड रोड़ मनेंद्रगढ़, जतीन देवांगन को 42016 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नागपुर, बलविन्द्र सिंह को 42017 ज्योति मिशन उच्चतर माध्यमिक विद्यायल सरभोका, विनोद भगत को 42018 भियानी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सरभोका, बसंत राम को 42019 सरस्वती शिशु मंदिर सरभोका, विनोद जायसवाल को 42020 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बेलबहरा, पवन कुमार साहू को 42021 शासकीय हाई स्कूल पिपरिया, सुरेन्द्र प्रसाद जायसवाल को 42022 ऐकेडमिक हाईट पब्लिक स्कूल तेन्दुडांड के लिए नियुक्त किया गया है।

**न्यायालय नज़ूल अधिकारी अम्बिकापुर जिला सरगुजा (छ0ग0)**

-:: ईश्तहार ::-

रा0प्र0क्रं0 202405021200/ अ-6/2023-24

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक रामकुमार दास आ0 स्व0रंगसाय जाति पनिका निवासी मणीपुर भाथूपारा अम्बिकापुर ने इस आशय का आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है कि आवेदक की बड़ी मां श्रीमती मुलारी देवी के स्वत्व एवं अधिपत्य की नजूल भूमि मोहल्ला सत्तीपारा, नगर अम्बिकापुर स्थित खसरा नंबर 745/1 रकबा 0.01 एकड़ भूमि है। आवेदक की बड़ी मां की मृत्यु दिनांक 22/11/2013 को हो गयी है। अतः भूधारक की मृत्यु हो जाने के उपरांत उक्त भूमि के अभिलेख से भूधारक का नाम विलोपित करते हुए आवेदक द्वारा अपना नाम दर्ज कराने हेतु भूधारक की मृत्यु प्रमाण पत्र की छायाप्रति सहित आवेदन पत्र अंतर्गत धारा 109,110 छ0ग0 भू-राजस्व संहिता 1959 के तहत प्रस्तुत किया गया है।
अतः उक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति या संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो वे अपना लिखित दावा/आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक 30/09/2024 तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत तिथि के पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।
आज दिनांक 11/07/2024 को मेरे न्यायालयीन मुद्रा एवं हस्ताक्षर से जारी किया गया।

सील
**नजूल अधिकारी**
अम्बिकापुर

**टी.सी. गुम सूचना**

मेरा नाम करण राय,आ0 श्री कृष्णा राय निवासी सुभाषनगर अम्बिकापुर जिला सरगुजा (छ.ग.) है। मैंने सन् 2021 में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भगवानपुर से कक्षा 12 वीं उत्तीर्ण किया है। मेरी कक्षा 12 वीं की टी.सी. दिनांक 15/07/2024 को मेरे निवास स्थान से बनारस रोड पर कहीं गुम हो गयी है। मुझे कॉलेज में एडमिशन कराना है।
अतः किसी भी सज्जन को मेरी उक्त टीसी मिले तो मुझे निम्न पते एवं मोबाईल नम्बर पर सूचित करने का कष्ट करें।

**करण राय**
आ0 कृष्ण राय
सुभाषनगर,अम्बिकापुर जिला-सरगुजा(छ.ग.)

# भारतीय हॉकी टीम ने लगाया जीत का चौका

## साउथ कोरिया को 3-1 से हराया

**भारतीय हॉकी टीम ने एशियन चैंपियंस ट्रॉफी में शानदार प्रदर्शन करते हुए लगातार चौथी जीत दर्ज कर ली है। भारत ने अपने चौथे मुकाबलें में साउथ कोरिया को 3-1 से शिकस्त दी। भारत पहले ही सेमीफाइनल का टिकट हासिल कर चुका है...**

**नई दिल्ली,12 सितम्बर 2024।** एशियन चैंपियंस ट्रॉफी 2024 में भारतीय हॉकी टीम का शानदार प्रदर्शन जारी है। भारत ने साउथ कोरिया को 3-1 से हराकर टूर्नामेंट में लगातार चौथी जीत दर्ज की। भारत के लिए अरिजीत सिंह हुंडल ने 1 और कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने 2 गोल दागे। हरमनप्रीत के दोनों गोल पेनल्टी कॉर्नर से आए। वहीं, अरिजीत ने फील्ड गोल दागा। इससे पहले टीम इंडिया ने अपने पहले मैच में मेजबान चीन को 3-0 और अपने दूसरे मैच में जापान को 5-1 से हराया था। वहीं, तीसरे मैच में मलेशिया को 8-1 से धूल चटाई थी। अब भारतीय हॉकी टीम अपने आखिरी राउंड रॉबिन मुकाबलें में 14 सितंबर को पाकिस्तान से भिड़ेगी। बता दें, भारत टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर चुका है।

### कप्तान हरमनप्रीत ने दागे 2 गोल

भारत ने 8वें मिनट में अरिजीत सिंह हुंडल के गोल से अपना खाता खोला और फिर अगले ही मिनट हरमनप्रीत सिंह के पेनल्टी कॉर्नर ने गोल की बढ़त को दोगुना कर दिया। इसके बाद 30वें मिनट में कोरिया की ओर से पलटवार हुआ और यांग ने गोल दाग दिया। पहले हॉफ तक भारत 2-1 से आगे था। दूसरे हॉफ में हरमनप्रीत ने एक और गोल दागा और 3-1 हो गया। मैच खत्म होने तक यही अंतर बरकरार रहा और भारत ने बाजी मारते हुए लगातार चौथी जीत हासिल कर ली।

इससे पहले मलेशिया ने गुरुवार को जापान के खिलाफ 5-4 से जीत दर्ज की। सैयद चोलन (12', 40'), नोर्स्याफिक सुमंत्रि (21'), सियारमन मैट (47') और कमाल अबू अजराई (48') के गोलों की मदद से मलेशिया ने जीत हासिल करते हुए पाइंट्स टेबल में चौथा स्थान हासिल किया। बुधवार को अपने पिछले मैच में भारत से 1-8 से हारने के बाद टेबल में सबसे निचले स्थान पर मौजूद मलेशिया को सेमीफाइनल में जगह बनाने की दौड़ में बने रहने के लिए हर हाल में जीतना था।

# शतरंज ओलंपियाड में भारत की शानदार शुरूआत

## प्रज्ञानानंदा और वैशाली चमके

**» प्रज्ञानानंदा ने शुरूआत करते हुए तिसिर मोहम्मद को हराया,विदित गुजराती,अर्जुन एरिगेसी और पी हरिकृष्णा ने भी अपने अपने मुकाबले जीते,महिला वर्ग में आर वैशाली और तानिया सचदेव ने पहले टाइम कंट्रोल में ही जीत दर्ज कर ली जबकि दिव्या देशमुख को जीत के लिये पसीना बहाना पड़ा, वहीं वंतिका अग्रवाल ने ड्रॉ खेला**

**नई दिल्ली,12 सितम्बर 2024।** भारतीय पुरूष टीम ने 45 वें शतरंज ओलंपियाड में शानदार शुरूआत करते हुए मोरक्को को 4 . 0 से हराया जबकि महिला टीम ने जमैका पर 3.5 .0.5 से जीत दर्ज की। विश्व चैम्पियनशिप चैलेंजर डी गुकेश ने पहले दौर से ब्रेक लिया है। आर प्रज्ञानानंदा ने शुरूआत करते हुए तिसिर मोहम्मद को हराया। विदित गुजराती,अर्जुन एरिगेसी और पी हरिकृष्णा ने भी अपने अपने मुकाबले जीते। महिला वर्ग में आर वैशाली और तानिया सचदेव ने पहले टाइम कंट्रोल में ही जीत दर्ज कर ली जबकि दिव्या देशमुख को जीत के लिये पसीना बहाना पड़ा। वहीं वंतिका अग्रवाल ने ड्रॉ खेला। अन्य मुकाबलों में अमेरिका ने पनामा को 3.5 . 0.5 से हराया। ओपन वर्ग में 99 टीमों ने जीत के साथ शुरूआत करके दो दो अंक बनाये। प्रज्ञानानंदा ने मोरक्को के मोहम्मद को मात दी जबकि गुजराती ने ओखिर मेहदी पियरे को हराया। विश्व रैंकिंग में चौथे स्थान पर काबिज एरिगेसी ने भी जाक एलबिलिया के खिलाफ अपना मुकाबला मजबूती से जीता। हरिकृष्णा को अनस मोसियाद ने चुनौती दी लेकिन खेल की उनकी गहरी समझ प्रतिद्वंद्वी पर भारी पड़ी। पुरूष टीम अगले दौर में आइसलैंड से खेलेगी।

महिला वर्ग में वैशाली को एडानी क्लार्क के खिलाफ काले मोहरों से खेलते हुए कोई दिक्कत नहीं आई। डी हरिका को आराम दिया गया था। तानिया सचदेव ने भी गैब्रियला वाटसन पर आसानी से जीत दर्ज की। विश्व जूनियर बालिका चैम्पियन दिव्या ने रचेल मिलेर के खिलाफ बराबरी के मुकाबले में बाजी मारी। वंतिका ने हालांकि रेहाना ब्राउन से ड्रॉ खेला। महिला वर्ग में 178 टीमें भाग ले रही हैं।

# इशान किशन की दलीप ट्रॉफी में एंट्री

**» लगाई शानदार फिफ्टी,**
**» टी20 की तरह की बल्लेबाजी**

**नई दिल्ली,12 सितम्बर 2024।** भारतीय क्रिकेट टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज इशान किशन ने दलीप ट्रॉफी 2024 के दूसरे चरण के मुकाबले में इंडिया सी के लिए बल्लेबाजी करते हुए बेहतरीन अंदाज में वापसी की और इस सीजन के अपने पहले ही मुकाबले में उन्होंने बेहतरी फिफ्टी लगाई है। इससे पहले इशान इंजरी के कारण पहला चरण नहीं खेल पाए थे। दूसरे चरण में मुकाबले में उनके खेलने की उम्मीद नहीं थी लेकिन उन्हें अचानक टीम में जगह मिली और उन्होंने कमाल का प्रदर्शन किया। इंडिया बी के खिलाफ इशान किशन ने मुकाबले में खबर लिखे जाने तक 90 रन बना लिए हैं। उन्होंने अपनी अर्धशतकीय पारी के दौरान एक छक्का और 7 चौके लगाए इस मुकाबले में इंडिया बी ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया था और इंडिया सी की तरफ से पारी की शुरुआत कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ और साई सुदर्शन ने की थी। ऋतुराज ने 2 गेंदों पर एक चौके मदद से 4 रन बनानए और फिर रिटायर हर्ट होकर पवेलियन लौट गए।

गायकवाड़ के वापस लौटने के बाद पहले विकेट के लिए साई सुदर्शन और रजत पाटीदार के बीच 96 रन की अच्छी साझेदारी हुई और फिर साई सुदर्शन जब 43 रन पर खेले रहे थे तब मुकेश कुमार ने उन्हें अपनी गेंद पर कैच आउट किया। इसके बाद ये साझेदारी टूट गई।

# भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए बांग्लादेश टीम का ऐलान

**» नजमुल हुसैन शंटो को मिली कप्तानी**

**ढाका,12 सितम्बर 2024।** 19 सितंबर से शुरू हो रही दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए बांग्लादेश की टीम का ऐलान हो गया है। वहीं इस सीरीज के लिए 16 सदस्यीय टीम का ऐलान बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने किया है, जिनमें ज्यादातर वही खिलाड़ी हैं, जो पाकिस्तान के खिलाफ टेस्ट सीरीज जीत में शामिल थे। नजमुल हुसैन शंटो कप्तानी करते नजर आएंगे।

बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड यानी बीसीबी ने एक अनकैप्ड बैटर को टीम में शामिल किया है, जबकि शोरीफुल इस्लाम चोट के कारण बाहर हैं। बोर्ड ने जाकेर अली को पहली बार टेस्ट टीम में शामिल किया है। बांग्लादेश ने हाल ही में दो मैचों की टेस्ट सीरीज में पाकिस्तान का सूपड़ा साफ किया था। ऐसे में टीम के हौसले बुलंद होंगे और यही कारण कि टीम पेस बैटरी के साथ भारत आएगी।

19 सितंबर से भारत और बांग्लादेश के बीच चेन्नई के एमए चिदंबरम स्टेडियम में पहला टेस्ट मैच खेला जाएगा। इस मुकाबले के लिए बांग्लादेश की टीम 15 सितंबर को चेन्नई पहुंचेगी। भारतीय खिलाड़ियों को आज यानी 12 सितंबर को चेन्नई में रिपोर्ट करना है। वहीं, दूसरा मुकाबला कानपुर के ग्रीन पार्क स्टेडियम में 27 सितंबर से खेला जाएगा। इसके बाद दोनों देशों के बीच तीन मैचों की टी20 सीरीज खेली जानी है। दोनों मैच भारतीय समय के अनुसार सुबह साढ़े 9 बजे से शुरू होंगे।

**बांग्लादेश की टीम इस प्रकार है...**

नजमुल हुसैन शंटो (कप्तान), शादमान इस्लाम, जाकिर हसन, मोमिनुल हक, मुशफिकुर रहीम, शाकिब अल हसन, लिटन दास, मेहदी हसन मिराज, जाकेर अली, तस्किन अहमद, हसन महमूद, नाहिद राना, तैजुल इस्लाम, महमदुल हसन जॉय, नईम हसन और खालेद अहमद।

**पहला टेस्ट मैच-** 19 सितंबर से चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में

**दूसरा टेस्ट मैच-** 27 सितंबर से कानपुर के ग्रीन पार्क स्टेडियम

## जेक फेजर-मैकगर्क के डेब्यू करते ही करियर पर संकट

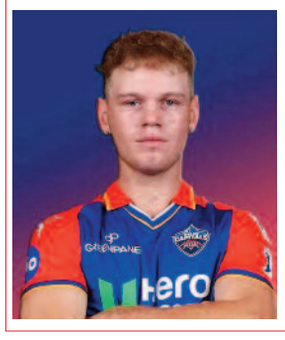

**लंदन,12 सितम्बर 2024।** इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच सीरीज शुरू हो चुकी है। तीन मैचों की सीरीज का पहला मैच हो भी गया है, जिसे ऑस्ट्रेलिया ने अपने नाम कर लिया है। ऑस्ट्रेलिया के लिए ट्रेविस हेड एक बार फिर बड़े खिलाड़ी बनकर निकले और अपनी टीम को जीत दिलाने में कामयाब रहे। हालांकि उनके आउट होने के बाद टीम की गाड़ी पटरी से उतर गई, जहां गेंदबाजों ने वापसी कराने का काम किया। इस बीच जेक फ्रेजर-मैकगर्क सभी की नजरों में रहा, जिसने अभी अभी अपना टी20 इंटरनेशनल डेब्यू किया है, लेकिन करियर शुरू होते ही उस पर संकट भी मंडराते हुए नजर आने लगा है।

# आईपीएल 2025 ऑक्शन से पहले टीमें कितने खिलाड़ी कर सकेंगी रिटेन

**नई दिल्ली,12 सितम्बर 2024।** आईपीएल यानी इंडियन प्रीमियर लीग एक बार फिर से चर्चा में है। वैसे तो आईपीएल का अगला सीजन अप्रैल से खेला जाएगा, लेकिन इसकी बातें अभी से शुरू हो चुकी हैं। दरअसल आईपीएल 2025 का ऑक्शन करीब है। लेकिन इससे पहले फैंस के बीच इस बात को लेकर उत्सुकता है कि टीमें अपने कितने खिलाड़ी रिटेन कर सकती हैं। बीसीसीआई जल्द ही इसको लेकर फाइनल ऐलान कर सकती है। इस बार हो सकता है कि नियमों में भी कुछ बदलाव नजर आएं।

### आईपीएल रिटेंशन पॉलिसी पर जल्द आ सकता है अपडेट

आईपीएल 2025 की रिटेंशन पॉलिसी को लेकर अभी तक बीसीसीआई की ओर से कुछ भी नहीं कहा गया है। हालांकि बीसीसीआई ने सभी आईपीएल टीम ओनर्स को एक मीटिंग के लिए बुलाया था, जिसमें सभी से उनकी राय मांगी गई। लेकिन आखिरी फैसला नहीं हो पाया। इसका कारण ये था कि टीमों का मत अलग अलग था। सभी की बातों को सुनने और समझने के बाद बीसीसीआई ने फैसला बाद में सुनाने की बात कही थी। इस बीच अब माना जा रहा है कि जल्द ही रिटेंशन पॉलिसी जारी कर दी जाएगी। अभी तक जो जानकारी हाथ लगी है, उसमें हिसाब से माना जा रहा है कि आईपीएल टीमें अपने अधिक से अधिक चार खिलाड़ी रिटेन कर सकती है। साथ ही इस बार आरटीएम यानी राइट टू मैच कार्ड की भी वापसी होने की संभावना नजर आ रही है।

### चार रिटेंशन और दो आरटीएम पर बन सकती है बात

इस बार आईपीएल से पहले मेगा ऑक्शन होना है। पिछली बार जब मेगा ऑक्शन हुआ था, उससे पहले टीमों को चार खिलाड़ी ही रिटेन करने की परमीशन दी गई थी। हालांकि कुछ टीमों की ओर से इस बात की शिकायत की गई थी कि वे जिन खिलाड़ियों को तीन साल बनाती हैं, तैयार करती हैं, उसके बाद मेगा ऑक्शन के चक्कर में उन्हें छोड़ना पड़ता है। हो सकता है कि इसकी दवा के रूप में आरटीएम को एक बार फिर से वापस लाया जाए। आरटीएम के तहत टीम ने अपने जिस खिलाड़ी को छोड़ा है, उसे ऑक्शन से वापस लाया जा सकता है। लेकिन इसकी शर्त ये है कि जिस भी टीम ने उस खिलाड़ी की जो आखिरी कीमत लगाई है, उसी पर उसे अपने पाले में लाना होगा।

### आरटीएम की हो सकती है वापसी

बीसीसीआई ने साल 2014 में पहली बार इस नियम को लागू किया था, लेकिन बाद में ये ज्यादा वक्त तक जारी नहीं रह सका। इस बार बीसीसीआई चार खिलाड़ी रिटेन करने की परमीशन दे सकती है, जिसमें भारत और विदेश के खिलाड़ी भी शामिल होंगे। कितने भारतीय और कितने विदेशी खिलाड़ी होंगे, इसका फैसला बीसीसीआई जल्द ले सकती है। फैंस के साथ ही टीमें भी रिटेंशन पॉलिसी का इंतजार कर रही हैं, ताकि वे अपने उन खिलाड़ियों को तय कर पाएं, जिन्हें वे अपने साथ रिटेन करना चाहती हैं। उम्मीद है कि जल्द ही इस पूरे मामले के पत्ते खुल जाएंगे और बात आगे बढ़ेगी।

# ट्रेविस हेड की पारी से आस्ट्रेलिया ने पहले टी 20 में इंग्लैंड को हराया

**मेलबर्न,12 सितम्बर 2024।** ट्रेविस हेड के 19 गेंद में अर्धशतक के दम पर आस्ट्रेलिया ने तीन टी20 मैचों की श्रृंखला के उद्घाटन मैच में इंग्लैंड को 28 रन से हरा दिया। आस्ट्रेलियाई टीम पहले बल्लेबाजी के लिये भेजे जाने पर तीन गेंद बाकी रहते 179 रन पर आउट हो गई।पावरप्ले में आस्ट्रेलिया ने 86 रन बनाये थे और दस ओवर के बाद स्कोर दो विकेट पर 118 रन था। एक समय लग रहा था कि आस्ट्रेलिया 200 का आंकड़ा पार करेगा। हेड ने 19 गेंद में अर्धशतक जमाते हुए 59 रन बनाये जिसमें आठ चौके और चार छक्के थे। इंग्लैंड को चोटिल कप्तान जोस बटलर की कमी खली। उसने चार विकेट 52 रन पर गंवा दिये।

इसके बाद लियाम लिविंगस्टोन (37) और सैम कुरेन (18) ने वापसी की कोशिश करते हुए पांचवें विकेट के लिये 54 रन की साझेदारी की। इंग्लैंड ने इसके बाद दस गेंद के भीतर तीन विकेट गंवा दिये जिससे स्कोर सात विकेट पर 113 रन हो गया।

पूरी टीम चार गेंद बाकी रहते 151 रन पर आउट हो गई। बाकी दो मैच कार्डिफ में शुक्रवार को और मैनचेस्टर में रविवार को खेले जायेंगे। इसके बाद पांच मैचों की वनडे श्रृंखला होगी।

# तारक मेहता का उल्टा चश्मा का क्यूट टप्पू बना खूंखार खलनायक

भव्य गांधी के अभिनय को नई दिशा मिल गई है। तारक मेहता का उल्टा चश्मा में एक मासूम और नटखट बच्चे टप्पू की भूमिका निभाने के लिए भव्य गांधी जाने जाते थे। भव्य गांधी के इस किरदार को लोगों का खूब प्यार मिला और वो घर-घर में पहचाना जाने वाला नाम बन गए। अब सोनी सब के लोकप्रिय शो पुष्पा इम्पॉसिबल के साथ भव्य का नाम जुड़ गया है। पुष्पा (करुणा पांडे) की प्रेरक यात्रा में भव्य खलल पैदा करते नजर आएंगे। भव्य गांधी की एंट्री के साथ ही पुष्पा और उसके परिवार के जीवन में एक नया खतरा पैदा होने वाला है। अब शो में एक मानसिक रोगी खलनायक के रूप में भव्य गांधी धूम मचाने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। वो बदला लेते और पुष्पा के जीवन को बरबाद करने की भावना के साथ कहानी को आगे बढ़ाएंगे। शो में उनके किरदार का नाम प्रभास है।पुष्पा इम्पॉसिबल में उनका किरदार प्रभास वास्तव में एक चुनौतीपूर्ण भूमिका है जो मासूम चरित्र टप्पू से बिल्कुल अलग है। प्रभास की मानसिकता और उसके द्वारा उत्पन्न किया गया तनाव कहानी में एक नया मोड़ लेकर आने वाला है, जो दर्शकों को एक अलग तरह के मनोरंजन का अनुभव देगा। भव्य गांधी का कहना है कि प्रभास की भूमिका निभाना उनके लिए एक नई और रोमांचक चुनौती है। यह भूमिका उनके अभिनय कौशल की विविधता को दर्शाती है, जो सिर्फ एक प्रकार के किरदार तक सीमित नहीं है। प्रभास के द्वारा पैदा की गई अनिश्चितता और तनाव दर्शकों को उनकी भूमिका में गहराई से जोड़ती है। पुष्पा इम्पॉसिबल में प्रभास की भूमिका निभा रहे भव्य गांधी ने कहा, प्रभास की भूमिका निभाना मेरे लिए एक अच्छा अनुभव है क्योंकि मैं पहली बार एक निगेटिव किरदार निभा रहा हूं और यह भूमिका तारक मेहता का उल्टा चश्मा के मासूम टप्पू की भूमिका निभाने से पूरी तरह अलग होने वाली है। प्रभास अप्रत्याशित और बहुत परेशान किरदार है। बाहर से शांत जरूर दिखता है लेकिन अंदर से उतना ही तीव्र है, उथल-पुथल करने के लिए तैयार। वो अपने अंदर काफी कुछ छिपाए बैठा है। यह उसे खतरनाक रूप से आकर्षक बनाता है। सोनी सब जैसे होम चैनल पर इस तरह के जटिल किरदार के साथ वापसी करना मेरे लिए अविश्वसनीय रूप से रोमांचक है।

# 16 साल बड़े और 3 बच्चों के पिता से प्यार और तबाह हो गया सुपरस्टार हीरोइन की फलक चूमती जिंदगी

बॉलीवुड की ऐसी हीरोइन जिन्हें ब्लैक एंड व्हाइट पर्दे पर देखकर ही लोग दीवाने हो जाते थे। बला की खूबसूरत और दिल पिघला देने वाले एक्सप्रेशन देख राजकुमार जैसे स्टार अपने डायलॉग भूल जाते थे। जिन्होंने महज 40 साल की उम्र में ऐसा नाम कमाया कि आज तक कोई हीरोइन उनके कद को नहीं छू सकी। इस हीरोइन का नाम था मीना कुमारी। मीना कुमारी ने 16 साल बड़े और 3 बच्चों के पिता से प्यार किया और यही प्यार उनकी तबाही का कारण बन गया।

बेहद हसीन और जहीन एक्ट्रेस मीना कुमारी महज 40 साल में ही पैसा, इज्जत और शौहरत की ऐसी मीनार बनाई कि आज भी लोग उसे भूल नहीं पाए हैं। अब 50 और 60 के दशक में सिनेमा में राज करने वाली मीना कुमारी की ट्रैजिक लवस्टोरी पर फिल्म बनने जा रही है। डायरेक्टर सिद्धार्थ पी मल्होत्रा ने इसका ऐलान कर दिया है। सिद्धार्थ मल्होत्रा ने हाल ही में फिल्म महाराज बनाई है, जिसमें आमिर खान के बेटे जुनैद ने लीड रोल निभाया है। अब डायरेक्टर मल्होत्रा मीना कुमारी और कमाल अमरोही की जिंदगी पर फिल्म बना रहे हैं।

### ये है मोहब्बत की असली कहानी

अगर बॉलीवुड इतिहास की सबसे बेहतरीन और बड़ी सुपरस्टार हीरोइन्स की बात की जाएगी तो मीना कुमारी का नाम सबसे पहले आएगा। 1 अगस्त 1932 को मुंबई में जन्मी महजबीन बानो की मां प्रभावति देवी (इकबाल बेगम) पारसी थियेटर की डांसर थीं। प्रभावति ने अली बक्श नाम के व्यक्ति से निकाह किया और इकबाल बेगम बन गईं। मीना कुमारी ने अपनी मां के साथ ही बचपन से डांस और एक्टिंग शुरू कर दी। साथ ही बचपन से ही फिल्मों में बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट काम शुरू कर दिया। साल 1939 में आई फिल्म लेदर फेस में बतौर बाल कलाकार मीना कुमारी ने पहली बार कैमरे की सूरत देखी। इसके बाद करीब आधा दर्जन फिल्में कीं और 1946 में बतौर हीरोइन पहली फिल्म बच्चों का खेल की। इस फिल्म के बाद एक्टिंग का ये सिलसिला शुरू हुआ और सफलता का फलक चूमता रहा। जिंदगी में पैसा, इज्जत और असीम शौहरत के बाद भी जिंदगीभर प्यार को तरसती रहीं। महज 18 साल की उम्र में ही 3 बच्चों के पिता और 16 साल बड़े कमाल अमरोही से निकाह कर लिया। दोनों में खूब प्यार था और दोनों की प्रेम कहानी काफी दिनों तक चली। लेकिन अंत में मीना कुमारी का दिल टूटा और ये प्यार उनकी बर्बादी की वजह बन गया।

### दिल टूटा और खुल गई शराब की बोतल

कमाल अमरोही से प्यार परवान चढ़ा और दोनों ने काम भी किया। मीना कुमारी देखते ही देखते शोहरत के सातवें आसमान पर पहुंच गईं। मीना कुमारी की खूबसूरती और दमदार एक्टिंग ने सभी को दीवाना कर दिया। बड़े-बड़े सुपरस्टार उन्हें देख अपने डायलॉग भूल जाया करते और सिनेमाघरों में मीना कुमारी को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ती। काजल (1965), परिणीता (1953), पाकीजा (1972) और बैजू बावरा (1952) जैसी अमर फिल्मों में अपनी एक्टिंग का बेहतरीन नमूना पेश किया। लेकिन कमाल अमरोही से मोहब्बत का ये सिलसिला जलन का शिकार बन गया। कमाल अमरोही को मीना कुमारी की शोहरत और दूसरे लोगों के साथ मिलने जुलने से शिकायत रहने लगी। यही शिकायत झगड़ों में बदली और दोनों के बीच विवाद होने लगे। दोनों ने तलाक ले लिया और मीना कुमारी डिप्रेशन में चली गईं। इसके बाद उन्हें डॉक्टर ने नींद के लिए ब्रांडी लेने की सलाह दी। लेकिन ब्रांडी ने उन्हें शराब की लत में धकेल दिया और इसी लत में 31 मार्च 1972 को महज 39 साल में ही उनका निधन हो गया।

# कलेक्टर कॉन्फ्रेंस में अफसरों पर भड़के सीएम

## कहा...आमजनों से संयमित लहजे में बात करें अधिकारी

**रायपुर, 12 सितम्बर 2024 (ए)।** मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने आज राजधानी रायपुर के न्यू सर्किट हाउस में दो दिवसीय कलेक्टर कॉन्फ्रेंस को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि सभी फ्लैगशिप योजनाओं में सैचुरेशन के लक्ष्य को ध्यान में रखकर कार्य करें। उन्होंने कुछ जिलों में आम जनता और स्कूली छात्रों से शासकीय अधिकारियों द्वारा किए गए दुर्व्यवहार पर सख्त नाराजगी जताई। मुख्यमंत्री ने कहा कि अधिकारियों-कर्मचारियों की भाषा-शैली मर्यादित होनी चाहिए। उन्होंने कलेक्टरों को जनसामान्य से संयमित लहजे में बातचीत करने की हिदायत दी और कहा कि यदि आपके अधीनस्थ अधिकारी भाषा संयम न रखें,तो उन पर तत्काल सख्त कार्यवाही करें।

मुख्यमंत्री ने कलेक्टरों से कहा कि स्थानीय स्तर की समस्याएं वहीं निपटे, छोटी-छोटी समस्याओं को लेकर लोगों को राजधानी न आना पड़े। इस बात का ध्यान जिला प्रशासन को रखना चाहिए। जनप्रतिनिधियों द्वारा ध्यान में लाई गई जन समस्याओं के त्वरित निदान के लिए प्रभावी कदम उठाएं जाएं।मुख्यमंत्री ने राजस्व विभाग की समीक्षा के दौरान साफ तौर पर कहा कि इस विभाग का आम लोगों और किसानों से ज्यादा वास्ता है। राजस्व के प्रकरणों का निराकरण बिना किसी लेट-लतीफी के किए जाने से शासन-प्रशासन की छबि बेहतर होती है। उन्होंने अधिकारियों को जनसामान्य की भूमि संबंधी छोटी-छोटी त्रुटियों एवं समस्याओं का निदान पूरी संवेदनशीलता के साथ समय-सीमा में करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने सारंगढ़-बिलाईगढ़, बस्तर, खैरागढ़-छुईखदान-गंडई जिले में राजस्व मामलों के निराकरण की धीमी गति पर अप्रसन्नता जताई। उन्होंने जिलेवार कलेक्टरों से अविवादित और विवादित नामांतरण, खाता विभाजन, सीमांकन, त्रुटि सुधार, डायवर्सन, असर्वेक्षित ग्रामों की जानकारी, नक्शा बटांकन की जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्व प्रकरणों के निराकरण में ऐसे जिले जिनकी प्रगति 70 प्रतिशत से कम है, उन्हें इस मामले में ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। विवादित बटवारा के प्रकरण 6 माह से ज्यादा लंबित न हो। सीमांकन के प्रकरणों को भी तेजी से निराकृत किया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने सभी कमिश्नरों को अधीनस्थ जिलों का नियमित दौरा कर राजस्व प्रकरणों के निराकरण की स्थिति की समीक्षा करने के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य को अभी पीएम आवास के अंतर्गत 8 लाख 46 हजार 931 आवासों की स्वीकृति मिली है। पूर्ववर्ती सरकार के दौरान पीएम आवास का काम काफी पिछड़ गया था। इसी के साथ ही हमने चिन्हांकित किये गये लगभग 47 हजार आवासहीन परिवारों को मुख्यमंत्री आवास योजना अंतर्गत आवास देने का निर्णय भी लिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में स्वच्छता सर्वे अभी चल रहा है। छत्तीसगढ़ के गांव और ग्राम पंचायतें स्वच्छता सर्वे को सभी मानदंडों को पूरा करती हों, इस पर विशेष रूप से ध्यान देने की जरूरत हैं।

## संक्षिप्त खबर

### छत्तीसगढ़ के 5 लाख हितग्राहियों को मिलेगी पीएम आवास योजना की पहली किस्त

प्रधानमंत्री आवास योजना

**रायपुर, 12 सितम्बर 2024 (ए)।** छत्तीसगढ़ में 15 सितंबर को मोर आवास मोर अधिकार कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। जिसमें पीएम आवास हितग्राहियों को पहली किस्त ट्रांसफर की जाएगी। कार्यक्रम में पीएम नरेंद्र मोदी वर्चुवल माध्यम से राशि जारी करेंगे। इसके साथ ही आवास प्लस एप्लीकेशन जारी होगा। दरअसल 15 सितंबर को पीएम आवास को लेकर बड़ा कार्यक्रम होगा। मोर आवास मोर अधिकार कार्यक्रम के तहत पीएम आवास हितग्राहियों को पहली किस्त मिलेगी।कार्यक्रम में पीएम मोदी नरेंद्र मोदी वर्चुवल माध्यम से राशि जारी करेंगे। इस दौरान राज्य के साढ़े 5 लाख हितग्राहियों को राशि ट्रांसफर की जाएगी। साथ ही आवास प्लस एप्लीकेशन भी जारी होगा। एप्लीकेशन के माध्यम से नए आवासहीन लोग कर आवेदन सकते हैं।

### एसीबी टीम ने मनरेगा लोकपाल को रिश्वत लेते रंगे हाथों किया गिरफ्तार

**गौरेला-पेंड्रा-मरवाही,12 सितम्बर 2024 (ए)।** छत्तीसगढ़ में रिश्वतखोरों के खिलाफ एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) लगातार कार्रवाई कर रही है और उन्हें रंगे हाथों रिश्वत लेते पकड़ रही है। इस बीच आज गौरेला-पेंड्रा-मरवाही जिले में एसीबी की एक बड़ी कार्रवाई की है। एसीबी की टीम ने मनरेगा के लोकपाल को 25 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया है. पीड़ित गौरेला जनपद पंचायत के कार्यक्रम अधिकारी की शिकायत पर यह बड़ी कार्रवाई की गई। लोकपाल मनरेगा वेद प्रकाश पांडेय को गिरफ्तार कर छह सदस्य एसीबी की टीम गौरेला जनपद के सभागार ले गई। गौरेला जनपद पंचायत के कार्यक्रम अधिकारी रोशन सराफ ने शिकायत दर्ज कराई थी। उनके एक भ्रष्टाचार के मामले में मनरेगा लोकपाल वेद प्रकाश पांडेय के द्वारा उनसे रिश्वत मांगी जा रही है, जिसकी शिकायत के बाद एसीबी की टीम ने जिला पंचायत के लोकपाल मनरेगा के कार्यालय में दबिश दी और गिरफ्तार किया है।

### नक्सलियों ने बीजापुर में 2 ग्रामीणों को फांसी पर लटकाया

लाल आतंक का उत्पात

**बीजापुर,12 सितम्बर 2024 (ए)।** जिले में नक्सलियों ने जनअदालत लगाकर दो ग्रामीणों की हत्या कर दी नक्सलियों ने भैरमगढ़ क्षेत्र के जप्पेमरका इलाके में दो दिन पहले एक छात्र समेत तीन ग्रामीणों के लिए जनअदालत लगाई थी जिसमें दो लोगों को पुलिस मुखबिरी के शक में मौत के घाट उतार दिया। वहीं तीसरे (छात्र) को रिहा किया है। नक्सलियों के भैरमगढ़ एरिया कमेटी ने ली दोनों ग्रामीणों के हत्या की जिम्मेदारी ली है।

## साय सरकार ने सीनियर रेसीडेंट से लेकर डॉक्टरों, प्राध्यापकों की बढ़ाई सैलरी

छत्तीसगढ़ की साय सरकार प्रदेश में स्वास्थ्य के क्षेत्र में बेहतरी के कार्य को लेकर लगातार प्रतिबद्ध है। इसी को लेकर स्वास्थ्य विभाग ने एक बड़ा निर्णय लिया है। स्वास्थ्य विभाग ने शासकीय चिकित्सा महाविद्यालयों के सीनियर रेजीडेंट्स (पीजी), सहायक प्राध्यापकों, सह प्राध्यापकों और प्राध्यापकों के वेतन में वृद्धि की घोषणा की है। यह आदेश 1 सितंबर 2024 से पूरे राज्य के शासकीय मेडिकल कॉलेजों के लिए प्रभावी होगा। छत्तीसगढ़ शासन के चिकित्सा शिक्षा विभाग की ओर से जारी आदेश के अनुसार गैर अनुसूचित क्षेत्रों के मेडिकल कॉलेज में पदस्थ प्राध्यापक का वेतन 1 लाख 55 हजार से बढ़ाकर 1 लाख 90 हजार रुपये कर दिया गया है। इसी तरह से सह प्राध्यापक का वेतन 1 लाख 35 हजार से 1 लाख 55 हजार, सहायक प्राध्यापक का वेतन 90 हजार से 1 लाख तथा सीनियर रेसीडेंट व प्रदर्शक (पीजी) का वेतन 65 हजार रुपये से बढ़ाकर 75 हजार रुपये कर दिया गया है।

### किसकी कितनी बढ़ी सैलरी

जारी आदेश के अनुसार अनुसूचित क्षेत्रों के मेडिकल कालेज में पदस्थ प्राध्यापक का वेतन 1 लाख 90 हजार रुपये से बढ़ाकर 2 लाख 25 हजार रुपये कर दिया गया है। इसी तरह से सह प्राध्यापक का वेतन 1 लाख 55 हजार से 1 लाख 85 हजार, सहायक प्राध्यापक का वेतन 90 हजार से 1 लाख 25 हजार तथा सीनियर रेसीडेंट व प्रदर्शक (पीजी) का वेतन 65 हजार रुपये से बढ़ाकर 95 हजार रुपये कर दिया गया है। शासकीय चिकित्सा महाविद्यालयों के संविदा चिकित्सकों के लिए जारी पुनरीक्षित संविदा वेतनमान के अनुसार अनुसूचित क्षेत्र में लगभग 46 फीसदी तथा गैर अनुसूचित क्षेत्र में लगभग 23 फीसदी की वेतन वृद्धि की गई है। इस ऐतिहासिक वेतन वृद्धि को लेकर स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने कहा है कि प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार को लेकर कोई समझौता नहीं होगा।

## मुख्यमंत्री साय के जर्जर स्कूलों पर तीखे तेवर

### कहा...जेल में होगी गुणवत्ता से समझौता करने वालों की जगह

कलेक्टर्स कॉन्फ्रेंस में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने जर्जर स्कूलों को लेकर सख्त निर्देश दिए। उन्होंने कलेक्टरों को निर्देश दिए कि स्कूलों की गुणवत्ता से समझौता नहीं होगा। गुणवत्ताहीन निर्माण की जांचकर संबंधित ठेकेदार के खिलाफ एफआईआर करने के निर्देश देते हुए उन्होंने कहा कि गुणवत्ता से समझौता करने वालों की जेल में जगह होगी। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने बैठक में अधिकारियों से कहा कि गुणवत्ताविहीन कार्य होने पर रिकवरी भी की जाएगी। कलेक्टर अपने जिले में भ्रमण कर स्कूलों का निरीक्षण करें. स्कूल-हॉस्टल की व्यवस्था ठीक करें। इसके साथ ही उन्होंने पीएम श्री योजना के तहत खैरागढ़ और सारंगढ़ में निर्माण कार्य प्रारंभ न होने पर असंतोष जताया। इसके पहले मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कलेक्टर कॉन्फ्रेंस में कुछ जिलों में आम जनता और स्कूली छात्रों से दुर्व्यवहार की घटनाओं पर जताई सख्त नाराजगी जताई। उन्होंने अधिकारियों को भाषा के संयम को लेकर विशेष हिदायत देते हुए कहा कि आपके अधिकारियों से भाषा का संयम चुका तो कार्यवाही करें। आपसे ऐसी गलती हुई तो मैं कार्यवाही करूंगा। उन्होंने कहा कि शासन की योजनाएं पूरी पारदर्शिता के साथ अंतिम पात्र व्यक्ति तक पहुंचे.।सभी फ्लैगशिप योजनाओं में सैचुरेशन के लक्ष्य को ध्यान में रखकर कार्य करें। मुख्यमंत्री ने कलेक्टरों से कहा कि स्थानीय स्तर की समस्याएं वहीं निपटे, छोटी छोटी समस्याओं को लेकर लोगों को राजधानी न आना पड़े। जनप्रतिनिधियों द्वारा उठाई गई जन समस्याओं पर त्वरित और प्रभावी कदम उठाएं।

## पेंशन वितरण को लेकर लापरवाही नहीं होगी बर्दाश्त...सीएम साय सख्त

मुख्यमंत्री साय ने कलेक्टर कॉन्फ्रेंस में समाज कल्याण विभाग के कार्यों की समीक्षा की। जिसमें सीएम ने निर्देशित किया कि समाज के सर्वाधिक वंचित तबके के जीवनयापन का आधार पेंशन है। पेंशन वितरण को लेकर लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी। समय पर जरूरतमंदों को पेंशन मिले, दिव्यांगों के लिए विशेष विद्यालय और अस्पताल के लिए अगले 6 महीनों में तैयार हो कार्ययोजना, नशा मुक्ति आज राष्ट्रीय समस्या, प्रत्येक जिले में नशा मुक्ति केंद्र की हो स्थापना। नशा मुक्ति संकल्प के साथ विशेष अभियान चलाएं जाएं । मुख्यमंत्री ने सुशासन एवं अभिसरण विभाग और सामान्य प्रशासन विभाग के कार्यों की समीक्षा के दौरान कहा, भूमिहीन परिवारों को जाति प्रमाण पत्र मिलने में न हो परेशानी, प्राथमिकता के साथ बनाया जाए प्रमाण पत्र, मुख्यमंत्री ने कहा मेरा व्यक्तिगत अनुभव, हमें समझनी होगी भूमिहीन परिवारों की पीड़ा, मुख्यमंत्री ने जरूरतमंदों को 15 दिनों के भीतर स्वेच्छानुदान की राशि स्वीकृत करने के दिए निर्देश, जन्म, जाति, निवास, आय और मृत्यु प्रमाण पत्र जैसे जरूरी दस्तावेज सुगमता के साथ बने, इस दिशा में हो काम। साथ ही मुख्यमंत्री ने कलेक्टरों को गोदाम निर्माण को लेकर निर्देश दिए और कहा, गोदाम निर्माण के लंबित कार्य समय पर पूर्ण हो जाएं , पैक्स में माइक्रो एटीएम के माध्यम से ही हो धान उपार्जन का भुगतान,पैक्स में कंप्यूटरीकरण का काम जल्द पूर्ण करें।

# डीईओ के ठिकानों पर एसीबी की दबिश

**बिलासपुर-रायपुर,12 सितम्बर 2024 (ए)।** जिला शिक्षा अधिकारी टीआर साहू के कई ठिकानों पर एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) ने एक साथ छापा मारा। कार्रवाई के दौरान, बिलासपुर में रात से हो रही बारिश के बीच, एसीबी की टीम सुबह 5:45 बजे नूतन कॉलोनी स्थित साहू के आवास पर पहुंची। बिलासपुर के साथ-साथ कवर्धा में स्थित साहू के निवास पर भी एसीबी की टीम ने छापा मारा है । इस छापे की खास बात यह थी कि एसीबी ने इस बार पुलिस की मदद नहीं ली, जिससे स्थानीय लोगों को इस कार्रवाई की भनक तक नहीं लगी। टीम केवल एक गाड़ी में सुबह-सुबह साहू के घर पहुंची, जब घर के सभी सदस्य गहरी नींद में थे। कॉल बेल बजाने पर जब दरवाजा खोला गया, तो एसीबी के अधिकारियों ने अपना परिचय दिया। एसीबी का नाम सुनते ही साहू और उनके परिवार के सदस्य के होश उड़ गये।

एसीबी सूत्रों के अनुसार, जिला शिक्षा अधिकारी टीआर साहू के खिलाफ अनुपातहीन संपत्ति की कई शिकायतें प्राप्त हुई थीं। इन शिकायतों की विस्तृत जांच के बाद एसीबी ने यह कार्रवाई की। सूत्रों का कहना है कि साहू के खिलाफ विभिन्न स्रोतों से मिले संपत्ति संबंधी दस्तावेजों और सबूतों की जांच जारी है। एसीबी टीम ने साहू के आवास से कई महत्वपूर्ण दस्तावेज और फाइलें जब्त की हैं।

### डीपीआई ने दशहरा-दीपावली की छुट्टी पर भेजा प्रस्ताव

**रायपुर, 12 सितम्बर 2024 (ए)।** छत्तीसगढ़ में डीपीआई (डायरेक्टरेट ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन) ने राज्य सरकार को कुल 64 दिनों की छुट्टियों का प्रस्ताव भेजा है। इसमें दीपावली, दशहरा, शीतकालीन और ग्रीष्मकालीन अवकाश शामिल हैं। राज्य सरकार इस प्रस्ताव पर विचार कर जल्द ही निर्णय लेगी।प्रस्ताव के अनुसार, दशहरा की छुट्टियां 7 अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक कुल 6 दिन, दीपावली की छुट्टियां 28 अक्टूबर से 2 नवंबर तक 6 दिन, शीतकालीन अवकाश 23 दिसंबर से 28 दिसंबर तक 6 दिन, और ग्रीष्मकालीन अवकाश 1 मई से 15 जून तक कुल 46 दिन का प्रस्ताव रखा गया है।

# कलेक्टर को घूस देने के आरोप में अंबुजा सीमेंट का अफसर गिरफ्तार

**रायपुर, 12 सितम्बर 2024 (ए)।** छत्तीसगढ़ के अंबुजा सीमेंट के पूर्व मुख्य विनिर्माण अधिकारी, रामभव गट्टू, को कलेक्टर को घूस देने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। सतर्कता अधिकारियों ने बरगढ़ के कलेक्टर आदित्य गोयल को रिश्वत देने के प्रयास में गट्टू को रंगे हाथों पकड़ा।

जानकारी के अनुसार, गट्टू जिला कलेक्टर के कार्यालय में उनसे मिलने पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने कलेक्टर को फूलों का गुलदस्ता और मिठाई का पैकेट भेंट किया। पैकेट पर संदेह होने पर कलेक्टर ने अपने चपरासी को उसे खोलने का आदेश दिया, जिसमें 500 रुपये के नोटों के चार बंडल पाए गए।

इसके तुरंत बाद गट्टू को हिरासत में लिया गया और सतर्कता अधिकारियों को सूचित किया गया। मौके पर पहुंची सतर्कता टीम ने 2 लाख रुपये की नकदी जब्त कर ली। आरोपी को गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया जा रहा है। इस मामले में संबलपुर सतर्कता पुलिस स्टेशन में पीसी अधिनियम,1988 के तहत एक केस दर्ज किया गया है, जिसमें लोक सेवक को रिश्वत देने का प्रयास करने का आरोप लगाया गया है।

# कुऐमारी एलओएस कमांडर सहित 4 ईनामी नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण

- उत्तर बस्तर डिवीजन के कुऐमारी एरिया कमेटी में सक्रिय थे
- आत्मसमर्पित नक्सलियो पर शासन द्वारा कुल 12 लाख रूपये का ईनाम घोषित है
- शासन की पुनर्वास नीति से प्रभावित होकर किया आत्मसमर्पण
- पुनर्वास नीति के तहत 25-25 हजार रूपये प्रोत्साहन राशि दिया गया

**कांकेर-रायपुर, 12 सितम्बर 2024 (ए)।** सुन्दरराज पी. (भा.पु.से.), के.एल. ध्रुव (भा.पु.से.)के मार्गदर्शन, आई. के. एलिसेला (भा.पु.से.) के निर्देशन में पुलिस द्वारा नक्सलियों के विरूद्ध चलाये जा रहे नक्सल उन्मुलन अभियान के तहत् महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुआ है। शासन की पुनर्वास नीति से प्रभावित होकर तथा नक्सलियों के खोखली विचारधारा, उनके शोषण, अत्याचार, हिंसा से तंग आकर सी.पी.आई. माओवादी संगठन उत्तर बस्तर डिवीजन के अंतर्गत कुऐमारी एरिया कमेटी में सक्रिय नक्सली जिन पर शासन की ईनाम पॉलिसी के तहत् उक्त 02 माओवादी सदस्यों पर 05-05 लाख एवं 02 माओवादी सदस्य पर 01-01 लाख रुपये का ईनाम घोषित है। आज दिनांक 12.09.2024 को के.एल.ध्रुव (भा.पु.से.) हरिन्दर पाल सिंह सोही एवं आई. के. एलिसेला (भा.पु.से.) के समक्ष आत्मसमर्पण करने पर प्रोत्साहन राशि 25-25 हजार रुपये प्रदान किया गया। इस अवसर पर संदीप पटेल (भा.पु.से.) अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भानुप्रतापपुर एवं पुलिस के अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

## वाहनों में डीजे लगाने को लेकर एससी के निर्देश

- डीजे-धुमाल संचालकों की हड़ताल में जाने की तैयारी
- मांग पूरी नहीं होने पर करेंगे प्रदर्शन

**रायपुर,12 सितम्बर 2024 (ए)।** छत्तीसगढ़ में डीजे को लेकर एससी के निर्देश पर राज्य सरकार ने नई गाइडलाइन जारी की है. अब डीजे लगाने वाली गाड़ियों का परमिट निरस्त किया जाएगा। नई गाइडलाइन का सख्ती से पालन करने सभी कलेक्टर और एसपी को निर्देश दिए गए हैं। वही इस पूरे मामले में रायपुर जिले के सभी डीजे संचालक एकत्रित हुए और कहा की गाड़ी में डीजे नहीं तो बड़ी परेशानी हो जाएगी। सामने सीजन है अगर हम डीजे बंद कर दिया गया तो सभी डीजे कर्मचारी और संचालक सड़क पर आ जाएंगे। हम शासन प्रशासन से बातचीत करेंगे अगर हमें डीजे बजाने की अनुमति नहीं मिलेगी तो सभी डीजे धुमाल कर्मचारी प्रदर्शन करेंगे।

रायपुर धुमाल एसोशिएसन के अध्यक्ष गौतम महानंद ने कहा कि हम लोग हर साल इन चीजों को झेलते हुए आ रहे हैं. लेकिन इस साल कुछ ज्यादा ही स्ट्रिक्ट है। आदेश में आया है कि प्रतिबंध गाड़ी में साउंड नहीं बांधना है। अगर साउंड इसमें नहीं बांधेंगे। तो किस में बाधेंगे। हम लोगों के साथ हर साल दुर्गा और गणेश पक्ष में हमारे साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है। प्रशासन कहता है की हमें डीजे व धुमाल बजाना नहीं है तो हम कैसे करेंगे। हमारे पास इतनी बड़ी संख्या है। सभी ने अपने-अपने स्तर पर खर्च किया है। किसी ने गाड़ी फाइनेंस कराया है तो किसी ने जनरेटर फाइनेंस करवाया है। किसी ने साउंड फाइनेंस करवा कर और किसी ने गाड़ी फाइनेंस करवा कर अपने-अपने हिसाब से लिए हैं। उसका बैंक में भुगतान कैसे कर पाएंगे। धुमाल एसोशिएसन के पदाधिकारियों ने कहा कि अभी हम लोग आजाद चौक थाने आए थे। सभी लोगों को अलग-अलग थाने से फोन आ रहा है। उनका कहना है आप लोगों को इस एरिया में नहीं बजाना है। अगर बजाते हुए पाए जाते हैं तो आपके खिलाफ कार्रवाई होगी। गाड़ी राजसात हो जाएगी।

अगर हमारी मांग पूरी नहीं होगी तो हम हड़ताल पर जाएंगे। अभी बिलासपुर,दुर्ग और राजनांदगांव हड़ताल चल रही है। अगर ऐसे ही रहा तो हम सभी धुमाल और डीजे ग्रूप हड़ताल पर चले जाएंगे। पूरे प्रदेश में लगभग कई लाखों लोग इससे प्रभावित हैं।

# सब इंस्पेक्टर अभ्यर्थियों का अनोखा प्रदर्शन

तेलीबांधा तालाब में करवाया मुंडन

**रायपुर,12 सितम्बर 2024 (ए)।** सब इंस्पेक्टर भर्ती 2018 का परिणाम अब तक जारी नहीं करने के विरोध में अभ्यर्थियों ने तेलीबांधा तालाब में मुंडन करवाया है। अभ्यर्थियों की एक सूत्रीय मांग है कि उनका परिणाम जारी किया जाए। परिणाम नहीं जाने करने के विरोध सभी अभ्यर्थी राजधानी रायपुर में डटे हुए है और लगातार अलग-अलग तरीके से प्रदर्शन कर रहे है। सभी अभ्यर्थी सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा 2018 का रिजल्ट जारी करने की एक सूत्रीय मांग कर रहे हैं। तारीख नहीं मिलने पर युवतियों ने भी मुंडन करवाने की बात कही है। अभ्यर्थी आमरण अनशन समेत अलग अलग प्रकार से प्रदर्शन कर रहे हैं।

वर्ष 2018 में सब इंस्पेक्टर की भर्ती निकाली गई थी जिसे आज 6 साल हो चुके है लेकिन आज तक प्रक्रिया अधूरी है क्योंकि परीक्षा के अंतिम परिणाम अब तक जारी नहीं हुए है।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा साई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)